संगीत नाटक अकादेमी Sangeet Natak Akademi

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत एवं परम्पराओं के संरक्षण की योजना

Safegarding the Intangible Cultural Heritage and Diverse Cultural Traditions of India

National Inventory Register of Intangible Cultural Heritage of India

1st Report, Session 2015-16

File No. 28-6/ICH-Scheme/2015-16/91. 21/04/2016

सूचिकृत प्रदर्शनकारी कला शैली :– जयपुर की कच्छी घोड़ी नृत्य परम्परा

Inventory Form :- Kachchhi Ghodi Dance Tradditions of Jaipur

स्वीकृत परियोजना :–

शीर्षक हिन्दी में :–

राजस्थान की विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियां

कच्छी घोड़ी शैली के पारम्परिक कलाकारों पर आधारित एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन

Title In English:-

Rajasthan ki Vividh Sanskritik Abhivyaktiyan

Kachchhi Ghodi ke Paramparik Kalakaron par aadharit ek Sarvekshanatmak Adhyayan

प्रस्तावित परियोजना का कार्यक्षेत्र :– जयपुर, राजस्थान

कच्छी घोड़ी की प्रस्तुति देते जयपुर के पारम्परिक कलाकार

जयपुर की कच्छी घोड़ी परम्परा, रिपोर्ट–एक :– राजस्थान में लोक अभिव्यक्तियों की एक समृद्ध और विशाल सांस्कृतिक परम्परा रही है। देश की आजादी से पूर्व भी हमारी लोक संस्कृति सामाजिक व पारम्परिक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम रही हैं तथा लोक मनोरंजन की एक विधा के रूप में जन–जन के साथ गहराई से जुड़ी रही है।

इसी क्रम में जयपुर शहर की कच्छी घोड़ी नृत्यों की भी एक विस्तृत और विशाल परम्परा विरासत के रूप में रही है। इस शैली के राणा–ढोली व भाट समुदायों के पारम्परिक कलाकारों द्वारा प्रमुख रूप से ढूंढाडी, राजस्थानी, मारवाड़ी, मेवाती, शेखावाटी, मालव व हिन्दी भाषाएं जन्मजात बोली जाती हैं। कुछ कलाकार अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेन्च, इटेलियन, स्पेनिश आदि भाषाएं भी बोलते हैं।

इस पहली रिपोर्ट में जयपुर, राजस्थान की कच्छी घोड़ी शैली से सम्बन्धित आंकडों को सूचिबद्ध करते हुए लगभग 30 पारम्परिक कलाकारों से सम्बन्धित ग्राम, समुदाय, परिवार, व्यक्तियों के नाम एवं सम्पर्क विवरणों के साथ इन कलाकारों की समस्याओं व इस परम्परा को सुदृढ बनाने हेतु इनके द्वारा दिये गये सुझावों को भी प्रस्तुत किया जा रहा है। कच्छी घोड़ी के हस्तशिल्पी, नृतक, गायक, वादक व आयोजक कलाकारों से सम्बन्धित तीन पीढियों की जानकारियों को यहां एक प्रतिरूप के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इन तीन पीढियों के कलाकारों में बालक, युवा व बुजुर्ग कलाकार शामिल हैं। (**संलग्न सं.–1**)।

गुलाबी नगरी के नाम से विश्व विख्यात जयपुर शहर में हसनपुरा ''ए'' राणा कॉलोनी व राणा बस्ती। हसनपुरा ''सी'' राय कॉलोनी। कठपुतली कोलानी, ज्योती नगर। कलाकार कोलानी, पानी पेच। कठपुतली नगर, जगतपुरा। मूंडिया रामसर, सिरसी रोड़ क्षेत्रों में प्रमुख रूप से कच्छी घोड़ी शैली व अन्य प्रदर्शनकारी कलाओं के लगभग 2000 पारम्परिक कलाकार निवास करते हैं।

उपर्युक्त परियोजना के माध्यम से जयपुर शहर की कच्छी घोड़ी लोक पारम्परिक शैली व कलाकारों की वर्तमान दशा व दिशा की ओर ध्यानाकर्षित करते हुए इनसे सम्बन्धित आंकड़े उपलब्ध करवाने व सूचीकृत करने के प्रयास किये गये हैं ताकि संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार की भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत एवं परम्पराओं के संरक्षण की योजना के लाभ तो इन कलाकारों को प्राप्त हो ही सकें साथ ही सम्बन्धित जानकारियां भी उपलब्ध करवाई जा सकें।

कलाकार कॉलोनी, पानी पेच

कठपुतली नगर, भवानी सिंह रोड़

कठपुतली कॉलोनी, जगतपुरा

राय कॉलोनी, हसनपुरा ''सी''

राणा बस्ती, हसनपुरा ''ए''

देश और विदेशी दर्शकों व पर्यटकों का भरपूर मनोरंजन करने वाले ये कलाकार आधुनिक जयपुर में बहुत ही निचले स्तर पर जीवन यापन कर रहे हैं। इनकी वर्तमान दशा को इस रिपोर्ट में प्रस्तुत छाया चित्रों के माध्यम से समझा जा सकता है। ये छाया चित्र इस पहली रिपोर्ट की तैयारी के दौरान लिये गये हैं। जिन कॉलोनियों व नगरों में ये कलाकार रहते हैं वहां से इन्हे कभी भी विस्थापित किया जा सकता है।

जयपुर शहर के अलावा राजस्थान के लगभग हर ज़िले में कच्छी घोड़ी नृत्यों की विरासतीय परम्परा रही है। उदाहरण, जयपुर के दक्षिण क्षेत्र में स्थित डिग्गी–मालपुरा से थोडा आगे स्थित बांरा व बघेरा गांवों में मराठाओं के समय के जंगी किले बने हुए हैं। उस दौरान मराठा और मुगल योद्धाओं के युद्ध होते थे। माना जाता है कि मराठा और मुगलों के युद्धों के चित्रण के रूप में आज तक यहां कच्छी घोड़ी खेली जाती है।

राजस्थान के डिग्गी–मालपुरा के क्षेत्रों में खेली जाने वाली कच्छी घोड़ी वीर रस की परम्परा के रूप में शुरू हुई। राजस्थान के गीतों, नृत्यों, संगीत के साजों, हस्तशिल्प व पारम्परिक वेशभूषा के प्रयोगों के द्वारा इस विधा को राजस्थानी परिवेश में ढाला गया है जो न केवल बहुत ही मनोरंजक है बल्कि इसे एक नई प्रयोगशील पारम्परिक शैली के रूप में भी देखा जा सकता है।

मराठा और मुगलों के युद्धों का चित्रण करते कच्छी घोड़ी के कलाकार

नाम को लेकर भ्रान्ति :– इस नृत्य के नाम के उच्चारण को लेकर आम जनमानस में भ्रान्ति है। अधिकतर लोग इस नृत्य का उच्चारण ''कच्ची घोड़ी'' करते हैं जो कि प्रचलित विचारधारा के हिसाब से गलत है। इस विधा के नाम का सही उच्चारण ''कच्छी घोड़ी'' है।

ऐसी भी मान्यता है कि इस नृत्य का उद्‌गम गुजरात के कच्छ क्षेत्र से होने की वजह से इस शैली को कच्छी घोड़ी कहा जाता है।

जयपुर शहर की कच्छी घोड़ी के कलाकार व इनके साज

कच्छी घोड़ी जयपुर सहित पूरे राजस्थान राज्य का एक लोकप्रिय पारम्परिक नृत्य है। उपर्युक्त परियोजना में जयपुर के कच्छी घोड़ी के पारम्परिक कलाकारों से सम्बन्धित जानकारियां प्रस्तुत करने के प्रयास किये गए हैं तथा राज्य के अन्य क्षेत्रों में खेली जाने वाली कच्छी घोड़ी परम्परा व कलाकारों से सम्बन्धित जानकारियां आगामी सत्रों में उपलब्ध करने के प्रयास किये जायेंगे।

जयपुर शहर की कच्छी घोड़ी की परम्परा किशनगढ़ के पास सुर्रा गांव में स्थित तेजाजी के मन्दिर से आई है तथा जयपुर की कच्छी घोड़ी नृत्य के नाम से राज्य और देश, विदेशों में प्रसिद्ध हुई है। शुरूआत से लेकर आज तक सावन–भादवा के महिने में यहां के गली, मोहल्लों में कच्छी घोड़ी के नृत्यों का आयोजन हर्षोल्लास से किया जाता रहा है।

इस नृत्य को तेजाजी की बिन्दोरी के नाम से भी जाना जाता है। तेजाजी की बिन्दोरी के समय यहां के पण्डित लोग एक बांस से बना झण्डा काम में लेते हैं जिसमें प्रमुख रूप से मोर पंख व झालरियां लगे होते हैं। इस बांस पर इन्हे इस तरह से लगाया जाता है ताकि बांस दिखार्द न दे। इस सुसज्जित बांस को तेजाजी का निशान भी कहा जाता है।

सावन–भादवा माह में तेजाती की बिन्दोरी के समय दर्शकों को लुभाने व इस ओर ध्यानाकर्षित करने के लिये कच्छी घोड़ी के कलाकार इस सवारी के आगे नृत्य करते हुए चलते हैं। यह परम्परा प्राचीन समय से आज तक प्रचलित है। प्राचीन समय में ढोल, झालर (कांसे के बने हुए कटोरी या थाली नुमा साज) व शंख आदि साजों के प्रयोग से यह सवारी आकर्षक व रोचक लगने लगती थी। समय परिवर्तन के साथ अब यहा रणसिंघा, बांकिया व कहीं–कहीं शहनाई व नगोड़े के प्रयोग भी देखने को मिलते हैं।

कच्छी घोड़ी नृत्य की प्रस्तुति के कलाकार

शेखावाटी क्षेत्र में भी कच्छी घोड़ी नृत्यों की विशाल परम्परा रही है। यहां के रामगढ क्षेत्र की कच्छी घोड़ी में भी वीर रस की प्रधान होती है तथा साजिन्दों के साथ दो नृतक नृत्य करते है जिनमें दोनों नृतक कच्छी घोड़ी के अन्दर होते हैं। एक कलाकार के हाथ में छोटा चाकू या जमिया होता है। इसे कटार भी कहा जाता है तथा दूसरे कलाकार के हाथ में तलवार होती है। कभी–कभी दोनों कलाकारों के हाथों में तलवार होती है। इस पारम्परिक नृत्य में कलाकार एक राजपूत व दूसरा मुगल योद्धा के रूप में नगाडे की थाप

पर नृत्य करके खूबसूरती के साथ युद्ध का स्वरूप प्रस्तुत करते हैं जो दर्शकों को मनोरंजक लगता है। इस नृत्य के साथ कथा गायन भी चलता रहता है।

राज्य के वरिष्ठ रंगकर्मी हिम्मत सिंह जी ने बताया कि ''कच्छी घोड़ी का जो स्वरूप आज जयपुर में दिखाई देता है वो काफी बदल गया है क्योंकि जीवन यापन की समस्या से संघर्ष करते इस समुदाय ने समय के साथ अपनी ज़रूरतों को ध्यान में रखते हुए इसके स्वरूप व प्रस्तुतियों में बदलाव कर लिये हैं जो सही नहीं है। लगभग 20 साल पहले मैने एक शोध कार्य के दौरान शेखावाटी के रामगढ क्षेत्र में कच्छी घोड़ी नृत्य की अनेक प्रस्तुतियां देखी थी। वो जिस रूप मे नृत्य करते हैं वो ही सही रूप है इस परम्परा का। इस शैली में जिस प्रकार से साज बजते हैं तथा रिद्म की द्रुत, मध्यम व तीव्र लय में जिस तरह से तलवारों या जमिया का प्रयोग होता है वो देखने में बहुत ही खूबसूरत लगता है।''

आजकल कच्छी घोड़ी का चलन स्वागत नृत्यों व गीतों के रूप में बढा है जिसे देख कर अतिथि व दर्शक प्रफुल्लित हो जाते हैं। जबसे जयपुर के राज परिवारों ने कच्छी घोड़ी के प्रयोग अपने आयोजनों में करने शुरू किये तभी से यहां के शाही साज रणसिंघा व बांकिया या तुर्रि काम में लिये जाने लगे। ललित कुमार राणा ने बताया कि, ''पहले और भी कई रजवाडी परम्पराएं थी यहां जैसे चढीजंड़ा, छतर कोथली, दमामन गायन, कलकला फेंकना आदि। आज ये परम्पराएं पूरी तरह से विलुप्त हो चुकी हैं। संरक्षण नहीं मिल पाने के कारण आज इन परम्पराओं के कलाकार ही नहीं बचे हैं।''

विवाह आयोजन में प्रस्तुति देते कच्छी घोड़ी के कलाकार

ये कलाकर परिवारिक आयोजनों, सरकारी व गैर सरकारी उत्सवों, होटलों आदि में अतिथियों के स्वागत में कच्छी घोड़ी का प्रदर्शन करके अपनी आजीविका चलाते हैं। कुछ कलाकार राज्य के अतिरिक्त देश और विदेशों में भी अपनी कला विधा की प्रस्तुतियां देते रहते हैं। इस विधा से जुड़े कुछ कलाकारों ने ईटली, जर्मनी, पेरिस, स्वीटज़रलैण्ड व हॉलैण्ड आदि देशों में अपनी प्रस्तुतियों के द्वारा एक अलग पहचान बनाई है।

जयपुर विरासत फाउण्डेशन के निर्देशक विनोद जोशी ने बताया कि,''अगर आप जयपुर से बाहर शेखावाटी में जाएं और स्पेशली रामगढ़ इलाके में जाएं या रतनगढ में भी आप देख सकते हैं कि, कई मुसलमान परिवार कच्छी घोड़ी के कुशल नृतक कलाकार हैं और आस–पास लगभग 100 किलोमीटर क्षेत्र में जब भी यहां शादी ब्याह होते हैं तो इन कलाकारों को कच्छी घोड़ी की प्रस्तुतियों के लिये बुलाया जाता है।''

पारम्परिक गीत व नृत्यः– मौखिक परम्पराओं और अभिव्यक्तियों के रूप में इस समुदाय द्वारा कई पारम्परिक गीत गाये जाते हैं, जैसे चाल घोड़ी चाल, बन्नारे बागां में झूला घाल्यां, केसरिया बना, आयो–आयो भादवा को मेलो, हरिया पोदीनो, दादाजी सणगारियो, तोरण आयो रायबर अदि गीत बड़े ही मनोरंजक रूप में गाये जाते हैं तथा कलाकारों द्वारा इन गीतों पर कच्छी घोड़ी के साथ नृत्य प्रस्तुत कर इसे और मनोरंजक बना दिया जाता है। पारम्परिक साजों के वादन पर भी यह नृत्य प्रस्तुत किया जाता है।

कच्छी घोड़ी नृत्य की मनोरम प्रस्तुति देते कलाकार

कच्छी घोड़ी एक प्रदर्शनकारी कला है। इस परम्परा के कलाकार कच्छी घोड़ी नृत्य के साथ भवाई नृत्य, चरी नृत्य, पुरूष कालाकारों द्वारा प्रस्तुत ग्रामीण भवाई नृत्य, घूमर नृत्य, कालबेलिया नृत्य, कठपुतली का खेल, भोपा–भोपी तथा बंजारा–बंजारी आदि पारम्परिक प्रदर्शनकारी कला विधाओं से भी सम्बन्धित हैं।

कच्छी धोड़ी व कठपुतली नृत्यों का रियाज़ करते कलाकार

इस समुदाय मे पारम्परिक रीती–रिवाज़ भी हर्षोल्लास से मनाये जाते हैं। पहले इस समुदाय में बाल विवाह की प्रथा थी। समयानुसार कुछ जागरूक कलाकारों ने इस प्रथा का विरोध किया फलस्वरूप आजकल युवावस्था में ही इस समुदाय में विवाह होते हैं। हिन्दू रीती–रिवाज़ अपनाने वाले इस समूदाय में अब विधवा विवाह भी होने लगा है।

इस समुदाय में शादी ब्याह के अवसर पर पहले सम्बन्धियों से परिचय करवाया जाता है उसके बाद सगाई समारोह, लगन टीका, डोरडा तारीख (शादी की तारीख 5 पंचों द्वारा तय की जाती है) इसके बाद शादी की तैयारियों में गणेश पूजन (सांकडी बीन), हल्दी, पीठी, मेहंदी, तेल, बिन्दोरा–बिन्दोरी, चाक–भात, महिला संगीत, की रस्में होती हैं। बारात निकासी के बाद सिंवाला (समडोला), तोरण, वरमाला, पाणीग्रहण संस्कार, प्रीती भोज होते हैं। दुल्हन की विदाई के समय रंगबरी, राम–रामी आदि रस्मों का प्रचलन इस समुदाय में है। इनके शादी ब्याह एक उत्सव के रूप में मनाये जाते हैं।

कुरूतियां :– समय के साथ–साथ इस समुदाय के कलाकार भी जागरूक हो रहे हैं तथा पुराने समय से चली आ रही कुरूतियों से छुटकारा पाने का प्रयास कर रहे हैं। इस समुदाय में आज भी मृत्यु भोज से जुडी हुई कुछ कुरूतियां विद्यमान हैं। इस समुदाय में मृत्यु भोज के समय नुक्ता की प्रथा है और इससे सम्बन्धित है सूखा तोल जिसमें घी, गुड़, चीनी, चावल, गेहूं आदि घर में आये प्रत्येक मेहमान और प्रत्येक रिश्तेदार को किलो ग्राम के हिसाब से तोल कर दिये जाते है।

इस कुरूती के बारे में कच्छी घोड़ी के पारम्परिक कलाकार ओम प्रकाश राणा का कहना है कि, ''मेरे समुदाय की यह प्रथा मुझे एक कुरूती के रूप में नज़र आती है। यह रीति–रिवाज़ बदलना चाहिये ताकि इस महंगाई के दौर में आने वाली नई पीढीयां अपने भविष्य को ध्यान में रखते हुए अपने आप को जागरूक बना सकें और अतिरिक्त आर्थिक भार से बच सकें।''

इस समुदा के लोगों का कहना है कि, हमारा समुदाय प्रकृति और जीव–जगत के करीब है क्योंकि एक तरफ तो हम हस्तशिल्प से कई प्रकार के जीव–जन्तु बनाते हैं तो दूसरी तरफ हम लोग कई प्रकार के जीव–जन्तुओं का पालन–पोषण भी करते हैं, जिनमें घोड़े, घोड़ियां, बकरे, बकरियां, मुर्गे, मुर्गियां, ऊँट, ऊँटणियां आदि प्रमुख हैं। इन पशुओं को पालने का मख्य कारण सुचारू जीवन–यापन ही है। अतिरिक्त समय में ये कलाकार जीव–जन्तुओं का व्यापार भी करते हैं ताकि भरण–पोषण चलता रहे। ग्रामीण क्षेत्रों में इस

समुदाय द्वारा की जाने वाली प्रस्तुतियों के दौरान अक्सर खुश होकर लोग इन्हे दान के रूप में पशु भी दे देते हैं। यही कारण है कि यह समुदाय प्रकृति और जीव जगत से जुड़ा हुआ है।

कच्छी घोड़ी का निर्माण हस्तशिल्प का एक बेजोड़ नमूना है जो परम्परा के रूप में एक पीढी से दूसरी पीढी में हस्तान्तिरित होता है। पहले बांस व पेपरमेशी से बनी कच्छी घोडियों का चलन था। आज के आधुनिक युग में बांस के साथ प्लास्टिक के पाइपों व बैंत की लकडियों का भरपूर प्रयोग किया जाने लगा है।

इसके अतिरिक्त घांस–फूस, प्रिन्ट किया हुआ सूती या रेशमी कपड़ा, टोकरियां, गोटा पत्ती और ऊन तथा रंगबिरंगे धागों आदि से खूबसूरत कच्छी घोड़ी का निर्माण किया जाता है। इससे कच्छी घोड़ी मज़बूत व आकर्षक बनती है तथा लम्बे समय तक इसका उपयोग किया जा सकता है।

नई कच्छी घोड़ी के निर्माण की प्रक्रिया शुरू करने से पहले इन कलाकारों द्वारा भगवान की पूजा अर्चना की जाती है ताकि हस्तशिल्प से निर्मित होने वाली कच्छी घोड़ी का निमार्ण कार्य निर्विघ्न पूरा किया जा सके।

पुराने तरीके से कच्छी घोड़ी का निर्माण करते कलाकार

नये तरीकों से कच्छी घोड़ी का निर्माण करते कलाकार

इन कलाकारों की रंग–बिरंगी वेशभूषा का निर्माण राजस्थान के बगरू व सांगानेरी प्रिन्ट के सूती कपडों से किया जाता है।

पारम्परिक परिधानों से सुसज्जित होते कलाकार

इस शैली की प्रस्तुती में काम में आने वाले लोक संगीत के साज जैसे ढोल तथा ढोलक का निर्माण इन कलाकारों द्वारा ही किया जाता है तथा कांसे, पीतल से बने साज जैसे शहनाई, बांकिया, रणसिंघा व थाली आदि ये लोग ठठेरा समाज से बनवाते हैं।

कच्छी घोड़ी व पारम्परिक साज

इस शैली के कलाकार हस्तशिल्त से निर्मत कच्छी घोड़ी के अलावा लकड़ी, रगों, रंग बिरंगे कपड़ों तथा धागों से कठपुतलियों का निर्माण तो करते ही हैं साथ ही घांस–फूस, रूई, धागे, गोटा पत्ती तथा रंगीन कपड़ों से हाथी, घोड़े, ऊँट, लडियों व बान्दरवाल आदि को जीवन–यापन के लिये बनाते व बेचते हैं।

हस्तशिल्प से बनी अन्य वस्तुओं का निर्माण करते कलाकार

दर्शकों के सामने प्रस्तुति देते कलाकार

कच्छी घोड़ी राजस्थान का एक लोकप्रिय पारम्परिक नृत्य है। प्रमुख रूप से शादियों के अवसर पर दूल्हे की पार्टी को और अधिक मनोरंजक बनाने के लिये पुरूष नृतकों द्वरा बनावटी घोड़ों (पुतली घोड़ों) पर सवारी करके यह पाम्परिक नृत्य प्रस्तुत किया जाता है। वर्तमान समय में राज्य के लगभग सभी ज़िलों में यह नृत्य अनेक अवसरों जैसे कि सरकारी उत्सवों, कार्यक्रमों, सांस्कृतिक व पारिवारिक आयोजनों, सभाओं, बैठकों, जुलूसों, कार्यशालाओं आदि के अवसर पर प्रस्तुत किया जाता है।

इस नृत्य में राजस्थान की लोक धुनों के साथ लोक गीतों का प्रयोग होता है तथा नृतक, गायक व वादक पारम्परिक वेशभूषा पहनते हैं जैसे रंगबिरंगी पगड़ी, रंगीन कुर्ता, धोती। कई बार छोटे–छोटे शीशों के गोलाकार और चौकोर टुकड़ों से भी इनकी वेशभूषा अलंकृत होती हैं। नृतक ढोल की थाप पर रणसिंहा, थाली, शहनाई, नगाड़े और बांकिये की आवाज़ के साथ कदम से कदम ताल मिलाते हैं साथ ही कभी–कभी इनके हाथों में एक नग्न तलवार भी रहती है। शेखावटी क्षेत्र की कच्छी घोड़ी की प्रस्तुतियों में नगाड़े का प्रयोग भी किया जाता है।

जयपुर शहर की यह पारम्परिक विधा लगभग 200 साल पुरानी है जो एक विरासत के रूप में आज हमारे सामने है परन्तु अपने जीवन–यापन, संरक्षण व संवर्धन के लिये संघर्ष करती यह परम्परा विलुप्त होने को मजबूर है। देश की आजादी के बाद से ही स्व. गणपत लाल डांगी जी ने राजस्थान की लोग परम्पराओं को आगे बढाया तथा विशेष रूप से कच्छी घोड़ी की परम्परा को आगे लाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इससे पहले इनके पिता स्व. माणक लाल जी डांगी ने राजस्थान की लोक कलाओं को बिना किसी आश्रय के न केवल जीवित रखा बल्कि पारम्परिक कलाकारों के जीवन–यापन के लिये भरसक प्रयास भी किये।

इस सम्बन्ध में कच्छी घोड़ी के पारम्परिक कलाकार धर्म प्रकाश राणा ने बताया कि, ''हम हमारी नई पीढी को इस विधा से जोडने का प्रयास कर रहे हैं। आज का युग शिक्षा और तकनीक का युग है और हमारी नई पीढी भी इस ओर आकर्षित हो रही है। हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे आज के परिवेश में हमारी पारम्परिक कच्छी घोड़ी की विधा में प्रशिक्षित हों ताकि इस विधा व कलाकारों के लिये जो सुधार हम नहीं कर पाये वो हमारी आने वाली नई पीढियां कर सकें।''

जयपुर में इस परम्परा के अभ्यासी समुदाय राणा ढोली व भाट समुदाय हैं। इन समुदायों ने कच्छी घोड़ी शैली की परम्परा को हर परिस्थिती में अपने स्तर पर बचाये रखने के प्रयास किये हैं तथा आज भी ये समुदाय इस शैली को बचाये रखने के निरन्तर प्रयास बिना किसी सरकारी व गैर सरकारी आश्रय के कर रहे हैं।

वर्तमान में कच्छी घोड़ी के पारम्परिक कलाकार बाबूलाल राणा, ओम प्रकाश राणा, लक्की राणा, तेजपाल नागोरी, ललित कुमार राणा, शैलेन्द्र राणा, गणपत भाट, कैलाश भाट, विजय भाट, बंसी राणा, रमेश भाट, प्रभुदयाल भाट, सत्य प्रकाश राणा तथा धर्म प्रकाश राणा आदि पारम्परिक दायित्वों के रूप में न केवल इस शैली को संजोये हुए हैं बल्कि अपनी अगली पीढी को इस कला विधा में प्रशिक्षित करने का प्रयास भी कर रहे हैं।

इस पारम्परिक विधा का नई पीढी व नये लोगों को ज्ञान और हुनर प्रदान करने हेतु जयपुर शहर में किसी भी प्रकार का सरकारी व गैर सरकारी शिक्षण व प्रशिक्षण संस्थान नहीं है। इन परिवारों की नई पीढी को बाल्यावस्था से ही घर के वातावरण में अनौपचारिक प्रशिक्षण दिया जाता है जो एक से दूसरे तक मौखिक रूप में संचारित होता है। इस समुदाय के अशिक्षित होने के कारण इनके द्वारा रचित गीत अनेक सक्षम आयोजकों व संगठनों द्वारा अपने नाम से संचारित करके मुनाफा कमाया जा रह है।

इस सम्बन्ध में इस विधा से जुड़े पारम्परिक कलाकार गणपत भाट का कहना है कि ''हमारी पारम्परिक कला विधाओं को बचाए रखने के लिये आज यहां नये पारम्परिक लोक विधा रंगमंच बनें या नये संस्थान बनें जिनका संचालन भी हमारे हाथों में ही हो ताकि हमारी पारम्परिक विधाएं सुरक्षित भी रह सकें और हमे हमारा पूरा मेहनताना भी मिल सके। आज का युग संचार व तकनीकों का युग है हमारी युवा पीढी भी संचार माध्यमों जैसे कम्प्यूटर, मोबाईल फोन व टेलीविजन की ओर आकर्षित हो रही है। इन हालातों में हमारी नई पीढीयां हमारी परम्पराओं को सीखने व इस क्षेत्र में काम करने में कम ही रूची ले रही है ऐसे में अन्य समुदायों को जोडना तो और भी कठिन है।''

दूसरी ओर कैलाश भाट का कहना है कि ''आज के संचार माध्यमों के प्रयोगों से हम लोगों के लिये संवाद सुगम हो गया है। अधिकतर जागरूक कलाकार उपर्युक्त संचार माध्यमों के प्रयोगों से निरन्तर कार्य करने का प्रयास कर रहे हैं। पिछले समय में संचार के माध्यम कम थे और उनको वहन किया जाना हमारे लिये सम्भव नहीं था लेकिन आज के

समय में लगभग सभी कलाकारों के पास मोबाईल फोन हैं, घर–घर में डिश टीवी आदि हैं जिसके कारण हमारा जीवन भी सरल और सुगम हुआ है।''

जयपुर विरासत फाउण्डेश के निर्देशक विनोद जोशी का इस शैली व इससे जुड़े कलाकारों के बारे में कहना है कि, ''हम पिछले 15 वर्षों से राजस्थान की लोक कलाओं और उनसे जुड़े कलाकारों व समुदायो के लिये काम कर रहे हैं उनको समझने का प्रयास कर रहे हैं। कैसे उनको देश दुनिया के सामने मौलिकता के साथ दिखा सकें, इनकी कार्यविधि बता सकें, ये हमारा काम है और इसमें जो बन पडता है वो करने का प्रयास करते हैं।'' एक आयोजक व कलाकार विजय तिवाड़ी का इस सम्बन्ध में कहना है कि, ''कलाकारों को उनकी मेहनत का पूरा पैसा मिलना चाहिये लेकिन हमारे यहां के कलाकारों को सिर्फ 30 प्रतिशत ही मानदेय मिल पाता है बाकी 70 प्रतिशत राशि बीच में ही गायब हो जाती है।''

इस शोध कार्य के दौरान इनके क्षेत्रों में जाकर मैंने यह अनुभव भी किया कि, भले ही यह समुदाय सुचारू जीवन–यापन के लिये संघर्ष कर रहा है परन्तु फिर भी इनके लगभग प्रत्येक घर में टेलिविजन है तथा एचडी. डिश टीवी एन्टिना लगा हुआ है। इस सम्बन्ध में जब इन कलाकारों से जानना चाहा तो लगभग सभी ने एक ही उत्तर दिया कि ''आज के समय में देश और दुनिया में घट रही घटनाओं के प्रति जागरूक रहने के लिये हम भी आज के संचार माध्यमों का प्रयोग कर रहे हैं।''

कठपुतली नगर का एक दृश्य

कलाकार कॉलोनी का एक दृश्य

कच्छी घोड़ी शैली के पारम्परिक कलाकार ओम प्रकाश रणा के अनुसार ''हमारी विधा शिक्षण और प्रशिक्षण से जुडी हुई एक सशक्त विधा हैं क्योंकि इसमें संगीत है, नृत्य है, अभिनय है तथा हस्तशिल्प है जो बिना प्रशिक्षण व कठिन अभ्यास के नहीं सीखा जा सकता। हमने कई बार अपने स्तर पर इस विधा के प्रशिण व शिक्षण हेतु प्रयास किये हैं

परन्तु सुविधाओं के अभाव में हमारे प्रयास हमेशा विफल हो जाते हैं। प्रायोजक तथा दान दाता हमारी ओर ध्यान नहीं देते ऐसे में सरकारी मदद से शैक्षणिक संगठनों का संचालन किया जाए तो उचित परिणाम प्राप्त किये जा सकते है।''

इन कलाकारों के कुछ बच्चे ही स्कूल जा पाते हैं बाकी आर्थिक तंगी के कारण पढ नहीं पाते। ये लोक कलाएं इन कलाकारों का व्यवसाय है इसलिये ये चाहते हैं कि इनके बच्चे इन विधाओं से जुड़े रहें। इन परिवारों के बच्चे भी कम्पयूटर, मोबाईल आदि में रूची लेते हैं। ये कलाकार चाहते हैं कि सरकार इनके बच्चों की शिक्षा–दीक्षा के लिये उचित व्यवस्था करे, इनकी कॉलोनियों का नियमन हो तथा इनकी लोक विधाओं के प्रोत्साहन के लिये व नये लोगों को इन विधाओं के साथ जोड़ने के लिये सरकार के स्तर पर प्रशिक्षण केन्द्र खोले जायें ताकि ये लोक कलाएं जीवित रह सकें क्योंकि ये पारम्परिक कलाएं धीरे–धीरे लुप्त हो रही हैं।

पेशेवर कलाकारों के इस समुदाय के लिये सामाजिक और सांस्कृतिक आयोजन जीवन यापन का एक बड़ा ही महत्वपूर्ण ज़रिया हैं। राज्य में होने वाले शादी ब्याह, पारम्परिक आयोजनों, सरकारी व गैर सरकारी समारोहों में कच्छी घोड़ी पारम्परिक लोक नृत्य शैली की प्रस्तुतियां अतिथियों के स्वागत हेतु की जाती हैं। इस पारम्परिक विधा की प्रस्तुति को शुभ शुभारम्भ के रूप में भी देखा जाता है। सामान्य से भी कम आय में गुजर–बसर करने वाले ये कलाकार अपनी लोक परम्पराओं के निरन्तर प्रदर्शन में लगे रहते हैं तथा देश और विदेश के पर्यटकों का भरपूर मनोरंजन करते हैं। जीवन यापन की समस्याओं से संघर्ष करता यह समुदाय बिना किसी आश्रय व प्रोत्साहन के अपनी प्रदर्शनकारी कलाओं को बचाये रखने का निरन्तर प्रयास कर रहा है। इस समुदाय के अधिकतर कलाकार अशिक्षित हैं।

इन कलाकारों को प्रोत्साहित करने हेतु राज्य सरकार का सहयोग बहुत कम है केवल कभी–कभी सरकारी आयोजनों में इन कलाकारों को प्रस्तुतियों के अवसर प्राप्त होते हैं। इन कलाकारों के संवर्धन हेतु राज्य सरकार के पास कोई योजना नहीं है जिससे इनकी पारम्परिक लोक कलाओं को बढावा मिल सके। यहाँ न तो इन लोक कलाकारों को अनुदान मिलता है, नाही इनके पास आवास की उचित व्यवस्था है और नाही सरकारी नौकरियाँ। जयपुर शहर के जिन क्षेत्रों में ये कलाकार रहते हैं वहाँ से इन्हे कभी भी विस्थापित किया जा सकता है। इन कलाकारों की सामाजिक स्थिती भी अच्छी नहीं है।

इस शैली के गीत–संगीत, अभिनय, नृत्य, वेशभूषा, संगीत के साज आदि विशेषताओं के कारण ही दर्शक वर्ग इस विधा के साथ जुड़ जाते हैं।

इन कलाकारों से हुई लगातार वार्ता के बीच एक महत्वपूर्ण सुझाव निकलकर आया है जो इस प्रकार से है, **''यदि राजस्थान के प्रत्येक पर्यटक स्थल पर जहां पर्यटक टिकिट खरीद कर हमारे गढ़ों, महलों, मंदिरों, संग्रहालयों आदि को देखने आते हैं वहां इन पारम्परिक कलाकारों की टोलियों को इनकी कला विधा के प्रदर्शनों हेतु नियुक्त कर दिया जाना चाहिये तथा इन कलाकारों के मानदेय को पर्यटकों से वसूल की जा रही टिकिट राशि में अतिरिक्त 10 रूपये की राशि के रूप में सम्मिलित कर लिया जाना चाहिये। अगर पर्यटकों के टिकिट राशि में यह अतिरिक्त राशि शामिल करली जाये तो इससे सरकार पर अतिरिक्त भार नहीं आयेगा और हमारे कलाकार अपना भरण–पोषण भी कर पायेंगे तथा इनकी पारम्परिक कला विधाएं संरक्षण भी प्राप्त कर पायेंगी।''**

कच्छी घोड़ी नृत्य की मनोरंजक प्रस्तुति देते कलाकार

उपर्युक्त सांस्कृतिक विरासत परम्परा के तत्वों में ऐसा कुछ भी नहीं है जो प्रतिपादित सांस्कृतिक मानव अधिकारों के मानकों के प्रतिकूल हो। इस परम्परा के कलाकार आयोजकों के बुलावे पर अपनी कला विधा की प्रस्तुति देते हैं। अतः ये कलाकार प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से किसी के भी आपसी सम्मान को ठेस नहीं पहुंचाते तथा किसी भी प्रकार से भारत देश की कानून व्यवस्था या उससे जुड़े समुदाय के समन्वय को या दूसरों को किसी भी प्रकार से क्षति नहीं पहुंचाते। यह समुदाय किसी भी प्रकार का विवाद खड़ा नहीं कर पाता, क्योंकि यह समुदाय निम्न स्तर में जीवन यापन कर रहा है। रिपोर्ट में प्रस्तुत छाया चित्रों व वीडियोज़ के माध्यम से इसे समझा जा सकता है।

ये कलाकार दिन में तो हस्तशिल्प से बने कच्छी घोडियों, कठपुतलियों, हाथी, ऊँट, घोड़े, झालर तथा बांदरवाल आदि के निर्माण में लगे रहते हैं। एक तरफ ये कलाकार शाम के समय इन खिलौनों को पर्यटकों को बेचने का काम करते हैं तो दूसरी तरफ कुछ कलाकार कच्छी घोड़ी के प्रदर्शनों के द्वारा पर्यटकों व दर्शकों का स्वस्थ मनोरंजन करके अपना रोज़मर्रा का जीवन यापन करने का प्रयास करते हैं। अधिकतर कलाकार अशिक्षित होने के कारण अपने देश के कानून कायदों से अनभिज्ञ हैं इस कारण से ये किसी भी प्रकार से विवाद खडा नहीं कर पाते। कच्छी घोड़ी के कलाकार ओम प्रकाश राणा ने बताया कि ''मैं लगभग 25 वर्षों से इस पारम्परिक विधा से जुड़ा हुआ एक नियमित कलाकार हूँ और आज तक ऐसा कोई विवाद मेरे सामने नहीं आया जिसमें हमने देश की कानून व्यवस्था में किसी भी प्रकार का काई व्यवधान उत्पन्न किया हो।''

संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार के सहयोग से संगीत नाटक अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा संचालित यह योजना पूरी तरह से उपर्युक्त पारम्परिक कला शैली के लिये पारदर्शिता, सजगता और प्रोत्साहन को इसलिये सुनिश्चित करती है क्योंकि इस योजना के माध्यम से इस विधा को न केवल बचाया जा सकता है अपितु इस विधा व इससे जुड़े कलाकारों को संरक्षित करने के प्रयास भी किये जा सकते हैं।

इस शैली से जुड़े कलाकारों को इस योजना के माध्यम से देश के सामने लाया जा सकता है। इस कला में हस्तशिल्प है, संगीत है, नृत्य है तथा अभिनय भी है परन्तु इन कलाकारों के पास बहुत ही कम संसाधन हैं। इस कला विधा को बचाये रखने के लिये इन कलाकारों के पास बहुत कम रजिस्टर्ड संस्था व संगठन हैं। ऐसे में सरकार के सहयोग से

यह विधा न केवल संरक्षित की जा सकती है बल्कि स्वस्थ मनोरंजक विधा के रूप में देश के सामने लाई भी जा सकती है।

उपर्युक्त परियोजना के माध्यम से चिन्हित कच्छी घोड़ी के पारम्परिक कलाकारों के रक्षण, संरक्षण व संवर्धन के लिये अभी तक बहुत कम उपाय किये गये हैं। अभी तक इस शैली के औपचारिक व अनौपचारिक तरीकों से दिये जाने वाले प्रशिक्षण की कोई व्यवस्था नहीं है। इस शैली के सन्दर्भ में अभी तक ना तो इन कलाकारों की पहचान की गयी है और नाही दस्तावेजीकरण व किसी प्रकार का शोधकार्य हुआ है। आज तक इन कलाकारों के पुनरूधार व पुर्नजीवन की भी कोई व्यवस्था नहीं की गयी है। पहली बार उपर्युक्त परियोजना के माध्यम से इस पारम्परिक लोक विधा पर शोध कार्य किया गया है।

राज्य की लोक सांस्कृतिक विरासत परम्परा के तत्वों के संरक्षण के लिये राजस्थान में सरकारी तौर पर कोई योजना अभि तक नहीं बनाई गयी है। जवाहर कला केन्द्र एवं पर्यटन विभाग जैसे सरकारी केन्द्र इस कला के कलाकारों को यदा–कदा प्रस्तुतिकरण हेतु मंच ही उपलब्ध करवा पाते हैं।

कच्छी घोड़ी कलाकार ओम प्रकाश राणा से साक्षात्कार

अशिक्षा, बेरोजगारी, गरीबी और सामाजिक सम्मान नहीं मिलने के कारण यह विधा लुप्त हो सकती है। इस सम्बन्ध में ओम प्रकाश राणा के साथ हुए एक साक्षात्कार में उन्होने कहा कि ‘‘हमारे समुदाय में शिक्षा का अभाव होने के कारण बेरोजगारी एक बड़ी

समस्या है। अगर इस ओर ध्यान नहीं दिया गया तो हमारे लिये इस विधा को छोड कर कुछ और काम तलाशना पड़ेगा। आज भी हमारे कलाकारों को जितना मेहनताना मिलना चाहिये उतना मिल नहीं रहा है। हमारा फायदा शिक्षित लोग उठा रहे हैं और स्थापित हो रहे हैं लेकिन हम आज भी लगभग वहीं के वहीं ही हैं जहां कल थे। समाज में भी हमारी दयनीय दशा है। कोई भी बैंक हमें लोन देता ही नहीं है। कभी रूपयों की ज़रूरत होती है तो गहने गिर्वी रख कर जो रकम मिलती है उससे ही संतोष करना पड़ता है। दूसरे समाज के लोग हमें गाने बजाने वाले कह कर दूसरी नज़र से देखते हैं, हीन भावना रखते हैं। हमारी महिलाएं आज भी पर्दे में ही घरेलू व बाहर के काम करती हैं। यह स्थिति बदलनी चाहिये।''

इस समुदाय की महिलाओं की वर्तमान स्थिति का एक दृश्य

कच्छी घोड़ी परम्परा के संरक्षण व संवर्धन हेतु इस रिपोर्ट के माध्यम से अनेक उपाय अपनाने के सुझाव आपके सामने प्रस्तुत हैं :–

1. यदि राजस्थान के प्रत्येक पर्यटक स्थल पर जहां पर्यटक टिकिट खरीद कर हमारे गढ़ों, महलों, मंदिरों, संग्रहालयों आदि को देखने आते हैं वहां इन पारम्परिक कलाकारों को इनकी कला विधा के प्रदर्शनों हेतु नियुक्त कर दिया जाना चाहिये तथा इन कलाकारों के मानदेय को पर्यटकों से वसूल की जा रही टिकिट राशि में अतिरिक्त 10 रूपये की राशि के रूप में सम्मिलित कर लिया जाना चाहिये। अगर पर्यटकों के टिकिट राशि में यह अतिरिक्त राशि शामिल करली जाये तो इससे सरकार पर अतिरिक्त भार नहीं आयेगा और

प्राप्त होने वाली इस राशि से हमारे कलाकार अपना भरण–पोषण भी करपायेंगे तथा इनकी पारम्परिक कला विधाएं संरक्षण भी प्राप्त कर पायेंगी।

2. इस कला विधा के संरक्षण, संवर्धन तथा शिक्षण व प्रशिक्षण के लिये राष्ट्रीय लोक नाट्य विद्यालयों की स्थापना होनी चाहिये।
3. इन कलाकारों को इनकी पारम्परिक कला विधाओं के प्रदर्शन हेतु अधिक से अधिक अवसर मिलने चाहिये।
4. स्तरीय पारितोषिक मिलना चाहिये।
5. स्कूली पाठ्यक्रमों में इस विधा को जोड़ा जाना चाहिये।
6. भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत एवं परम्पराओं के संरक्षण की योजना के तहत आयोजित होने वाले समारोहों में इन कलाकारों को भी कच्छी घोड़ी पारम्परिक शैली की प्रस्तुति करने के अवसर मिलने चाहिये।
7. नये लोगों को इस विधा से जोड़ने हेतु लगातार कार्यशालाएं आयोजित होनी चाहिये।
8. इस विधा व इसके कलाकारों के वीडियो दस्तावेज राष्ट्रीय टेलीविजन चैनल्स् पर प्रसारित हों तो इन कलाकारों की सहभागिता सुनिश्चित की जा सकती है।

इस शोध कार्य के दौरान पारम्परिक कलाओं से जुडे जयपुर शहर के कुछ गैर सरकारी संगठनों के प्रतिनिधियों से साक्षत्कार किये गये। ये साक्षात्कार व हस्तशिल्त से निर्मित कच्छी घोड़ी व इसकी प्रस्तुतियों के वीडियो तथा फोटोग्राफ डीवीडी फोर्मेट में आप तक भिजवाये गये हैं। इन प्रतिनिधियों की महत्वपूर्ण जानकारियां इस प्रकार से हैं :–

(अ) 1. संस्था :– सुरनई संस्था, जयपुर

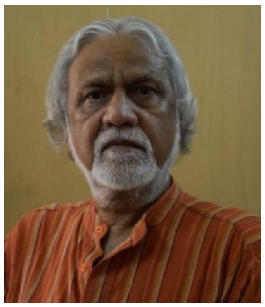

2. सम्बन्धित अधिकारी :– हिम्मत सिंह

3. पदनाम :– निर्देशक

4. पता :– सी–267 भाभा मार्ग, तिलक नगर, जयपुर

5. मोबाईल नं. :– 9314951825

6. ईमेल :– himmatsinghjadeja@yahoo.co.in

7.अन्य सम्बन्धित जानकारी:– विश्व प्रसिद्ध कालबेलिया नृतक पद्मश्री गुलाबो देवी जिनका असली नाम गुलाबी है को हिम्मत सिंह जी ही पुष्कर, अजमेर से जयपुर लाये थे।

(ब) 1. संस्था :– जयपुर विरासत फाएण्डेशन

2. सम्बन्धित अधिकारी :– श्री विनोद जोशी

3. पदनाम :– निर्देशक

4. पता :– होटल डिग्गी पैलेस, शिवाजी मार्ग, सूचना केन्द्र के पास, टोंक रोड़, जयपुर, राजस्थान

5. मोबाईल नं. :– 9414075175

6. ईमेल :–vinodvirasat@gmail.com

7. अन्य सम्बन्धित जानकारी :– पिछले लगभग 15 वर्षों से राज्य की लोक कलाओं व कलाकारों के उत्थान व प्रोत्साहन हेतु बिना किसी सरकारी मदद के निरन्तर कार्यरत एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था।

(स) 1. संस्था :– ऑल राजस्थान म्यूज़िक आर्टिस्ट वेलफेयर आर्गेनाइजेशन

2. सम्बन्धित अधिकारी :– श्री विजय तिवारी

3. पदनाम :– निर्देशक

4. पता :– 33–34 ग्रीन पार्क, राम मंदिर के पास झोटवाड़ा जयपुर

5. मोबाईल नं. :– 9782105055, 7062823050

6- ईमेल :– bestsinger11@gmail.com

7- अन्य सम्बन्धित जानकारी :– अपने स्तर पर ही राज्य के कलाकारों की एक सम्पर्कसूची का निर्माण करने का प्रयास कर रहे हैं।

काफी खोज बीन करने के बाद कच्छी घोड़ी व इस शैली के पारम्परिक कलाकारों से सम्बन्धित कुछ पुस्तके व जानकारियां **पर्यटन विभाग, राजस्थान सरकार, विरासत फाऊण्डेशन, जयपुर, जवाहर कला केन्द्र, जयपुर, सुरनई संस्था, जयपुर, ऑल राजस्थान म्यूज़िक आर्टिस्ट वेलफेयर आर्गेनाइजेशन के** पुस्तकालयों व प्रतिनिधियों से प्राप्त हुई है। जिन पुस्तकों में इस शैली के बारे में जो भी कुछ थोडी बहुत सामग्री प्राप्त हुई वे हैं :–

1. Mathur, U.B., Folk Ways in Rajasthan, Page No. 146, The Folklorists, Jaipur, 1986.

2. Pandey, Tripti, Where Silence Sings, Page No. 66, Harper Collins Publications, India, 1999.

इस अवसर पर इस शोध कार्य की पहली रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए मुझे अतिप्रसन्नता है तथा प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, केन्द्रीय संगीत नाटक अकादेमी, नई दिल्ली, कच्छी घोड़ी पारम्परिक शैली के कलाकार श्री ओम प्रकाश राणा, श्री रमेश भाट, श्री कैलाश भाट, श्री बंसी राणा, श्री प्रभुदयाल तथा सुरनई संस्था से वरिष्ठ रंगकर्मी श्री हिम्मत सिंह जडेजा, विरासत फाऊण्डेशन, जयपुर से श्री विनोद जोशी, ऑल राजस्थान म्यूज़िक आर्टिस्ट वलेफेयर आर्गेनाइजेशन से श्री विजय तिवारी सहित मेरी धर्म पत्नी श्रीमती मोनिका सिंह, मेरे पुत्र श्री लक्ष्य सिंह तथा एक्टर्स थियेटर@राजस्थान, एक्टर्स अकेडमी ऑफ राजस्थान व शीष्य श्री रोहित गुप्ता, श्री विनय शुक्ला, श्री शुभम शर्मा का विशिष्ट सहयोग प्राप्त हुआ। इन सभी का मैं हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ।

कच्छी घोड़ी के पारम्परिक कलाकारों के साथ मेरी टीम

पहली रिपोर्ट की तैयार की कुछ अन्य तस्वीरें

शोधार्थी के हस्ताक्षर :–

शोधार्थी का नाम :– डॉ. चन्द्रदीप हाड़ा
आसीएच, पीएच.डी., जेआर.एफ.,
एनएस.–रंगमंच

संस्था का नाम :– एक्टर्स थियेटर@राजस्थान
एक्टर्स अकेडमी ऑफ राजस्थान

पता :– पी–3, किसान मार्ग, वेस्ट 2, मधुबन कॉलोनी, टोंक रोड़, जयपुर–302015, राजस्थान

फोन नं. :– 0141–3294739 मोबाईल नं. :– 07821844466, 09460187865

ईमेल :– chandradeephada@gmail.com
drchandradeep@actorstheatre.in

वेबसाईट :– www.actorstheatre.in

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत परम्पराओं के संरक्षण हेतु स्वीकृत परियोजना

फाईल न.:–28-6/ICH-Scheme/ 91/2015-16, 29 January 2016 संलग्न सं.:– 1

राजस्थान की विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियां

कच्छी घोड़ी शैली के पारम्परिक कलाकारों पर आधारित एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन

सम्पर्कसूत्र व अन्य जानकारियों हेतु प्रस्तावित प्रपत्र, सत्र 2015–16

कलाकार का नाम :– बाबू लाल राणा

जन्म तिथि :– 22.08.1951 उम्र :–65 वर्ष

पत्नि का नाम :– स्व. शान्ती देवी

माता व पिता का नाम :– स्व. प्रभाती देवी व स्व. प्रभुनारायण राणा

समुदाय जिससे आप सम्बन्धित हैं :–राणा ढोली समाज

पारम्परिक कला विधा में आपकी भूमिका :–कच्छी घोड़ी नृतक व शहनाई वादक

ईमेल :– **rangeelorajasthan2013@gmail.com**

वेबसाईट :– **www.rangeelorajasthan.com**

दूरभाष न. :–9314888418

शैक्षणिक योग्यता :– 5 वीं तक

संस्था का नाम :– रंगीलो राजस्थान कला संस्था, जयपुर (रजिस्टर्ड नहीं)

वर्तमान व स्थाई पता :– म.नं. 272 तेजाजी के मंदिर के पास, राय कॉलोनी, हसनपुरा–सी, जयपुर–302006

आपकी कलाविधा की वर्तमान स्थिति :– कभी–कभी पर्यटन विभाग के कुछ आयोजनों में कच्छी घोड़ी की प्रस्तुति देने के अवसर मिलते हैं। राज्य सरकार के पास ऐसी कोई योजना नहीं है जिससे इस विधा को संरक्षण और प्रोत्साहन मिल सके। आर्थिक असुरक्षा के कारण शिक्षा का अभाव है इस कारण हमारा समुदाय आगे नहीं बढ पा रहा है।

भविष्य के लिये सुझाव :– हमारी इस कला विधा की ओर ध्यान दिया जाना चाहिये ताकि हम भी देश के विकास में सहभागिता निभा सकें।

दिनांक : 03.03.2016

स्थान : जयपुर

शोधकर्ता के हस्ताक्षर पारम्परिक कलाकार के हस्ताक्षर

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत परम्पराओं के संरक्षण हेतु स्वीकृत परियोजना

फाईल न.:–28-6/ICH-Scheme/ 91/2015-16, 29 January 2016 संलग्न सं.:– 1

राजस्थान की विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियां

कच्छी घोड़ी शैली के पारम्परिक कलाकारों पर आधारित एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन

सम्पर्कसूत्र व अन्य जानकारियों हेतु प्रस्तावित प्रपत्र, सत्र 2015–16

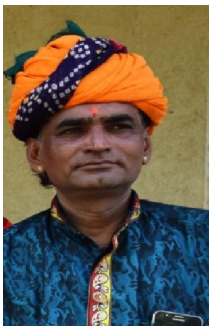

कलाकार का नाम :– ओम प्रकाश राणा

जन्म तिथि :– 07.11.1975 उम्र :–40 वर्ष

पत्नि का नाम :– श्रीमती गीता देवी

माता व पिता का नाम :– स्व. शान्ती देवी व श्री बाबूलाल राणा

समुदाय जिससे आप सम्बन्धित हैं :–राणा ढोली समाज

पारम्परिक कला विधा में आपकी भूमिका :–कच्छी घोड़ी नृतक

ईमेल :– **rangeelorajasthan2013@gmail.com**

वेबसाईट :– **www.rangeelorajasthan.com**

दूरभाष न. :–9829033085, 9929111511

शैक्षणिक योग्यता :– 10 वीं तक

संस्था का नाम :– रंगीलो राजस्थान कला संस्था, जयपुर (रजिस्टर्ड नहीं)

वर्तमान व स्थाई पता :– म.नं. 272 तेजाजी के मंदिर के पास, राय कॉलोनी, हसनपुरा–सी, जयपुर–302006

आपकी कलाविधा की वर्तमान स्थिति :– स्थिति दयनीय है। जितना काम मिलना चाहिये मिल नहीं रहा है। जिस दौर से हमारी पारम्परिक विधा गुजर रही है उसमें इस विधा के लुप्त होने के खतरे अधिक हैं। नई पीढी इस काम को अधिक महत्व नहीं दे रही है।

भविष्य के लिये सुझाव :– हमारी इस कला विधा को जीवित रखने के लिये सरकार द्वारा कोई संस्थान खोला जाना चाहिये ताकि हमारा जुड़ाव नये लोगों से भी हो सके।

दिनांक : 22.05.16

स्थान : जयपुर

शोधकर्ता के हस्ताक्षर पारम्परिक कलाकार के हस्ताक्षर

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत परम्पराओं के संरक्षण हेतु स्वीकृत परियोजना

फाईल न.:–28-6/ICH-Scheme/ 91/2015-16, 29 January 2016 संलग्न सं.:– 1

राजस्थान की विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियां

कच्छी घोड़ी शैली के पारम्परिक कलाकारों पर आधारित एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन

सम्पर्कसूत्र व अन्य जानकारियों हेतु प्रस्तावित प्रपत्र, सत्र 2015–16

कलाकार का नाम :– लक्की राणा

जन्म तिथि :– 14.03.2004 उम्र :–12 वर्ष

पत्नि का नाम :– अविवाहित

माता व पिता का नाम :– श्रीमती गीती देवी व श्री ओम प्रकाश राणा

समुदाय जिससे आप सम्बन्धित हैं :–राणा ढोली समाज

पारम्परिक कला विधा में आपकी भूमिका :–कच्छी घोड़ी नृतक

ईमेल :– **rangeelorajasthan2013@gmail.com**

वेबसाईट :– **www.rangeelorajasthan.com**

दूरभाष न. :–9829033085, 9929111511

शैक्षणिक योग्यता :– 8 वीं में अध्ययनरत

संस्था का नाम :– रंगीलो राजस्थान कला संस्था, जयपुर (रजिस्टर्ड नहीं)

वर्तमान व स्थाई पता :– म.नं. 272 तेजाजी के मंदिर के पास, राय कॉलोनी, हसनपुरा–सी, जयपुर–302006

आपकी कलाविधा की वर्तमान स्थिति :– जब हम सोसायटी में निकलते हैं तो हमें बार–बार महसूस करवाया जाता है कि हम उनके लायक नहीं हैं। आज भी हम दूसरे समाज के साथ उठ–बैठ नहीं कर सकते।

भविष्य के लिये सुझाव :– हम हमारी इस पारम्परिक विधा से जुडे रहना चाहते हैं लेकिन जब तक समाज और सरकार हमारी ओर ध्यान नहीं देगें तब तक बदलाव नहीं आयेगा इसलिये हमारी पारम्परिक विधाओं को सरकार संरक्षित कर हमें आगे बढाये।

दिनांक : 31.05.16

स्थान : जयपुर

शोधकर्ता के हस्ताक्षर पारम्परिक कलाकार के हस्ताक्षर

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत परम्पराओं के संरक्षण हेतु स्वीकृत परियोजना

फाईल न.:–28-6/ICH-Scheme/ 91/2015-16, 29 January 2016 संलग्न सं.:– 1

राजस्थान की विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियां

कच्छी घोड़ी शैली के पारम्परिक कलाकारों पर आधारित एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन

सम्पर्कसूत्र व अन्य जानकारियों हेतु प्रस्तावित प्रपत्र, सत्र 2015–16

कलाकार का नाम :– सत्य प्रकाश राणा

जन्म तिथि :– 01.11.1979 उम्र :–37 वर्ष

पत्नि का नाम :– श्रीमती सरोज देवी

माता व पिता का नाम :– स्व. शान्ती देवी व बाबू लाल राणा

समुदाय जिससे आप सम्बन्धित हैं :–राणा ढोली समाज

ईमेल :– **rangeelorajasthan2013@gmail.com**

पारम्परिक कला विधा में आपकी भूमिका :–कच्छी घोड़ी नृतक व गायक

वेबसाईट :– **www.rangeelorajasthan.com**

दूरभाष न. :– 9829032987

शैक्षणिक योग्यता :– 9 वीं तक

संस्था का नाम :– रंगीलो राजस्थान कला संस्था, जयपुर

वर्तमान व स्थाई पता :– म.नं. 252 तेजाजी के मंदिर के पास, राय कॉलोनी, हसनपुरा–सी, जयपुर–302006

आपकी कलाविधा की वर्तमान स्थिति :– स्थिति अच्छी नहीं कही जा सकती। लगातार काम नहीं मिलने के कारण जीवन–यापन करना मुश्किल हो रहा है। यह दशा हमारी लगभग सभी पारम्परिक कलाओं की है। कुछ लोग जो प्रसिद्ध हैं सिर्फ उन्हे ही लगातार और बड़े आयोजनों में काम करने के अवसर मिल रहे हैं।

भविष्य के लिये सुझाव :– एक ऐसा शिक्षण संस्थान बने जहां हमारे बच्चों को निःशुल्क शिक्षण प्राप्त हो तथा हमारी पारम्परिक कला विधाओं को संरक्षित करके भी रखा जाये।

दिनांक : 03.03.16

स्थान : जयपुर

शोधकर्ता के हस्ताक्षर पारम्परिक कलाकार के हस्ताक्षर

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत परम्पराओं के संरक्षण हेतु स्वीकृत परियोजना

फाईल न.:–28-6/ICH-Scheme/ 91/2015-16, 29 January 2016 संलग्न सं.:– 1

राजस्थान की विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियां

कच्छी घोड़ी शैली के पारम्परिक कलाकारों पर आधारित एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन

सम्पर्कसूत्र व अन्य जानकारियों हेतु प्रस्तावित प्रपत्र, सत्र 2015–16

कलाकार का नाम :– धर्म प्रकाश राणा

जन्म तिथि :– 14.03.1983 उम्र :–33 वर्ष

पत्नि का नाम :– श्रीमती ज्योति देवी

माता व पिता का नाम :– स्व. शान्ती देवी व श्री बाबूलाल राणा

समुदाय जिससे आप सम्बन्धित हैं :–राणा ढोली समाज

पारम्परिक कला विधा में आपकी भूमिका :–कच्छी घोड़ी गायक व वादक

ईमेल :– **dharmprakashrana@gmail.com**

वेबसाईट :– **www.rangeelorajasthan.com**

दूरभाष न. :–9829459975

शैक्षणिक योग्यता :– 10 वीं तक

संस्था का नाम :– रंगीलो राजस्थान कला संस्था, जयपुर (रजिस्टर्ड नहीं)

वर्तमान व स्थाई पता :– म.नं. 252 तेजाजी के मंदिर के पास, राय कॉलोनी, हसनपुरा–सी, जयपुर–302006

आपकी कलाविधा की वर्तमान स्थिति :– स्थिति अच्छी नहीं है। हमारी प्रस्तुतियों को देख कर दर्शक बहुत खुश हाते हैं लेकिन आयोजक हमें पूरा मेहनताना नहीं देते।

भविष्य के लिये सुझाव :– हमारी यह कला विधा पर्यटकों को बहुत लुभाती है और राज्य में पर्यटक खूब आते हैं अगर हमारी विधा को पर्यटन उद्योग से जोड दिया जाये तो हमारी इस लोक विधा को बचाया जा सकता है।

दिनांक : 03.03.16

स्थान : जयपुर

शोधकर्ता के हस्ताक्षर पारम्परिक कलाकार के हस्ताक्षर

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत परम्पराओं के संरक्षण हेतु स्वीकृत परियोजना

फाईल न.:–28-6/ICH-Scheme/ 91/2015-16, 29 January 2016 संलग्न सं.:– 1

राजस्थान की विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियां

कच्छी घोड़ी शैली के पारम्परिक कलाकारों पर आधारित एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन

सम्पर्कसूत्र व अन्य जानकारियों हेतु प्रस्तावित प्रपत्र, सत्र 2015–16

कलाकार का नाम :– ललित कुमार राणा

जन्म तिथि :– 13.04.1975 उम्र :–41 वर्ष

पत्नि का नाम :– श्रीमती शान्ती देवी

माता व पिता का नाम :– श्रीमती पानी देवी व श्री सूरजनारायण

समुदाय जिससे आप सम्बन्धित हैं :–राणा ढोली समाज

पारम्परिक कला विधा में आपकी भूमिका :–कच्छी घोड़ी कलाकार व आयोजक

ईमेल :– **lalitranajaipur98@gmail.com**

वेबसाईट :– **www.folktheme.com**

दूरभाष न. :– 9829376178, 9636517228

शैक्षणिक योग्यता :– 10 वीं तक

संस्था का नाम :– गौरव लोक कला संरक्षण संस्था, जयपुर

वर्तमान व स्थाई पता :– म.नं. 325 तेजाजी के मंदिर के पास, राय कॉलोनी, हसनपुरा–सी, जयपुर–302006

आपकी कलाविधा की वर्तमान स्थिति :– काफी दयनीय स्थिति है। हम बेरोज़गारी के दौर से गुज़र रहे हैं। कच्छी घोड़ी का काम मुश्किल से मिलता है। शैली लुप्त हो रही है।

भविष्य के लिये सुझाव :– सभी पर्यटक स्थलों पर हम पारम्परिक लोक कलाकारों को लगातार प्रदर्शन करने के अवसर दिये जायें तथा हमारा मानदेय पर्यटकों की टिकिट राशि में शामिल कर लिया जाये तो एक निश्चित राशि तो हमें प्राप्त होगी ही साथ ही हमें पहचान भी मिल सकेगी। हमें भी सरकार से पहचान पत्र मिलने चाहिये।

दिनांक : 01.06.16

स्थान : जयपुर

शोधकर्ता के हस्ताक्षर पारम्परिक कलाकार के हस्ताक्षर

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत परम्पराओं के संरक्षण हेतु स्वीकृत परियोजना

फाईल न.:–28-6/ICH-Scheme/ 91/2015-16, 29 January 2016 संलग्न सं.:– 1

राजस्थान की विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियां

कच्छी घोड़ी शैली के पारम्परिक कलाकारों पर आधारित एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन

सम्पर्कसूत्र व अन्य जानकारियों हेतु प्रस्तावित प्रपत्र, सत्र 2015–16

कलाकार का नाम :– शैलेन्द्र राणा

जन्म तिथि :– 10.07.1994 उम्र :– 22 वर्ष

पत्नि का नाम :– श्रीमती रेखा देवी

माता व पिता का नाम :– शान्ती देवी व ललित कुमार राणा

समुदाय जिससे आप सम्बन्धित हैं :–राणा ढोली समाज

पारम्परिक कला विधा में आपकी भूमिका :–कच्छी घोड़ी में ढोल वादक

ईमेल :– **rajasthanifolkshow@gmail.com**

वेबसाईट :– **www.folktheme.com**

दूरभाष न. :– 9636517228

शैक्षणिक योग्यता :– 10 वीं तक

संस्था का नाम :– गौरव लोक कला संरक्षण संस्था, जयपुर

वर्तमान व स्थाई पता :– म.नं. 325 तेजाजी के मंदिर के पास, राय कॉलोनी, हसनपुरा–सी, जयपुर–302006

आपकी कलाविधा की वर्तमान स्थिति :– हमारी कच्छी घोड़ी लोक कला लुप्त होती जा रही है। स्वागत के लिये शादी–ब्याह में ही बुलाया जता है बाकी समय हम घर में ही बैठे रहते हैं।

भविष्य के लिये सुझाव :– हमारी इस कला विधा के नियमित प्रशिक्षण के लिये प्रशिक्षण केन्द्र खोले जायें, इसी से हमारी परम्परा को संरक्षण प्राप्त हो सकेगा।

दिनांक : 01.06.16

स्थान : जयपुर

शोधकर्ता के हस्ताक्षर पारम्परिक कलाकार के हस्ताक्षर

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत परम्पराओं के संरक्षण हेतु स्वीकृत परियोजना

फाईल न.:–28-6/ICH-Scheme/ 91/2015-16, 29 January 2016 संलग्न सं.:– 1

राजस्थान की विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियां

कच्छी घोड़ी शैली के पारम्परिक कलाकारों पर आधारित एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन

सम्पर्कसूत्र व अन्य जानकारियों हेतु प्रस्तावित प्रपत्र, सत्र 2015–16

कलाकार का नाम :– बन्टी राणा

जन्म तिथि :– 04.06.1983 उम्र :–33 वर्ष

पत्नि का नाम :– श्रीमती सन्तोष राणा

माता व पिता का नाम :– श्रीमती विद्या देवी व स्व. श्याम लाल राणा

समुदाय जिससे आप सम्बन्धित हैं :–राणा ढोली समाज

पारम्परिक कला विधा में आपकी भूमिका :–कच्छी घोड़ी में बांकिया व ढोल वादक

ईमेल :– नहीं

वेबसाईट :– नहीं

दूरभाष न. :–9829658577

शैक्षणिक योग्यता :– अशिक्षित

संस्था का नाम :– नहीं

वर्तमान व स्थाई पता :– म.नं. 433 ममता स्कूल के पास, राणा बस्ती हसनपुरा–ए, जयपुर–302006

आपकी कलाविधा की वर्तमान स्थिति :– अच्छी नहीं है। साल में 3 महिने काम मिलता है बाकि समय बेरोजगार रहना पडता है।

भविष्य के लिये सुझाव :– लगातार काम मिले ताकि हमारा खर्चा–पानी चलता रहे।

दिनांक : 25.05.16

स्थान : जयपुर

शोधकर्ता के हस्ताक्षर पारम्परिक कलाकार के हस्ताक्षर

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत परम्पराओं के संरक्षण हेतु स्वीकृत परियोजना

फाईल न.:–28-6/ICH-Scheme/ 91/2015-16, 29 January 2016 संलग्न सं.:– 1

राजस्थान की विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियां

कच्छी घोड़ी शैली के पारम्परिक कलाकारों पर आधारित एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन

सम्पर्कसूत्र व अन्य जानकारियों हेतु प्रस्तावित प्रपत्र, सत्र 2015–16

कलाकार का नाम :– रवि शंकर राणा

जन्म तिथि :– 30.08.1992 उम्र :– 24 वर्ष

पत्नि का नाम :– श्रीमती पिंकी देवी

माता व पिता का नाम :– प्रेम देवी व लक्ष्मण राणा

समुदाय जिससे आप सम्बन्धित हैं :–राणा ढोली समाज

ईमेल :– **shankarram.ravi38@gmail.com**

पारम्परिक कला विधा में आपकी भूमिका :–कच्छी घोड़ी नृतक

वेबसाईट :– **www.rangeelorajasthan.com**

दूरभाष न. :–9314888418

शैक्षणिक योग्यता :– 8 वीं तक

संस्था का नाम :– रंगीलो राजस्थान कला संस्था, जयपुर

वर्तमान व स्थाई पता :– राणा बस्ती, ममता स्कूल के पीछे, हसनपुरा–ए, जयपुर

जयपुर–302006

आपकी कलाविधा की वर्तमान स्थिति :– स्थिति अच्छी नहीं है। रोजमर्रा की जरूरतें भी पूरी नहीं कर पा रहे हैं। बेराजगारी की समस्या से लगभग हम सभी जूझ रहे हैं।

भविष्य के लिये सुझाव :– हमें भी अहमियत मिले। कलाकारों को पहचान पत्र मिलें, लगातार काम मिले। सरकारी योजनाओं का लाभ हमें भी मिले। स्कूली पाठ्यक्रमों में हमारी लोक कलाओं को भी पढाया जाये।

दिनांक : 25.05.16

स्थान : जयपुर

शोधकर्ता के हस्ताक्षर पारम्परिक कलाकार के हस्ताक्षर

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत परम्पराओं के संरक्षण हेतु स्वीकृत परियोजना

फाईल न.:–28-6/ICH-Scheme/ 91/2015-16, 29 January 2016 संलग्न सं.:– 1

राजस्थान की विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियां

कच्छी घोड़ी शैली के पारम्परिक कलाकारों पर आधारित एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन

सम्पर्कसूत्र व अन्य जानकारियों हेतु प्रस्तावित प्रपत्र, सत्र 2015–16

कलाकार का नाम :– रमेश भाट

जन्म तिथि :– याद नहीं उम्र :– 35 वर्ष

पत्नि का नाम :– श्रीमती सुनीता देवी

माता व पिता का नाम :– श्रीमती शान्ती देवी व श्री बाबू लाल भाट

समुदाय जिससे आप सम्बन्धित हैं :–भाट समाज

पारम्परिक कला विधा में आपकी भूमिका :–कच्छी घोड़ी हस्तशिल्पकार व कलाकार

ईमेल :– नहीं

वेबसाईट :– नहीं

दूरभाष न. :– 8003435734

शैक्षणिक योग्यता :– निरक्षर

संस्था का नाम :– नहीं

वर्तमान व स्थाई पता :– 260 पानी पेच कलाकार कॉलोनी, पुलिस अकेडमी के सामने, शास्त्री नगर, जयपुर

आपकी कलाविधा की वर्तमान स्थिति :– पहले कच्छी घोडियां खूब बनती थीं आज कल कम बनती हैं। अशिक्षा हमारी दुर्दशा का बड़ा कारण है।

भविष्य के लिये सुझाव :– अगर सरल तरीकें से सरकार की योजनाओं को हमें समझाया जाये तो हम भी इन योजनाओं का लाभ लेकर हमारा स्तर सुधार सकते हैं।

दिनांक : 19.05.16

स्थान : जयपुर

शोधकर्ता के हस्ताक्षर पारम्परिक कलाकार के हस्ताक्षर

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत परम्पराओं के संरक्षण हेतु स्वीकृत परियोजना

फाईल न.:–28-6/ICH-Scheme/ 91/2015-16, 29 January 2016 संलग्न सं.:– 1

राजस्थान की विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियां

कच्छी घोड़ी शैली के पारम्परिक कलाकारों पर आधारित एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन

सम्पर्कसूत्र व अन्य जानकारियों हेतु प्रस्तावित प्रपत्र, सत्र 2015–16

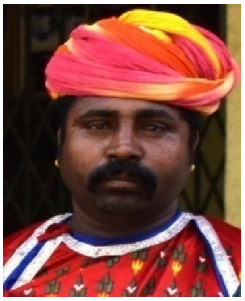

कलाकार का नाम :– कैलाश भाट

जन्म तिथि :– याद नहीं उम्र :– 36 वर्ष

पत्नि का नाम :– श्रीमती संजु देवी

माता व पिता का नाम :– श्रीमती शान्ती देवी व श्री रामपाल भाट

समुदाय जिससे आप सम्बन्धित हैं :–भाट समाज

पारम्परिक कला विधा में आपकी भूमिका :– कच्छी घोड़ी गीत गायक व वादक

ईमेल :– नहीं

वेबसाईट :– नहीं

दूरभाष न. :– 9829334965

शैक्षणिक योग्यता :– निरक्षर

संस्था का नाम :– नहीं

वर्तमान व स्थाई पता :– 71 पानी पेच कलाकार कॉलोनी, पुलिस अकेडमी के सामने, शास्त्री नगर, जयपुर

आपकी कलाविधा की वर्तमान स्थिति :– बेरोज़गारी अधिक है। इस कला विधा के साथ जीवन–यापन कठिन हो रहा है।

भविष्य के लिये सुझाव :– लगातार काम मिले। सरकार ऐसी योजनाएं बनाये जिससे हम जैसे कलाकारों का भी भला हो।

दिनांक : 22.05.16

स्थान : जयपुर

शोधकर्ता के हस्ताक्षर पारम्परिक कलाकार के हस्ताक्षर

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत परम्पराओं के संरक्षण हेतु स्वीकृत परियोजना

फाईल न.:–28-6/ICH-Scheme/ 91/2015-16, 29 January 2016 संलग्न सं.:– 1

राजस्थान की विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियां

कच्छी घोड़ी शैली के पारम्परिक कलाकारों पर आधारित एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन

सम्पर्कसूत्र व अन्य जानकारियों हेतु प्रस्तावित प्रपत्र, सत्र 2015–16

कलाकार का नाम :– विजय भाट

जन्म तिथि :– याद नहीं उम्र :– 13 वर्ष

पत्नि का नाम :– अविवाहित

माता व पिता का नाम :– श्रीमती संजु देवी व श्री कैलाश भाट

समुदाय जिससे आप सम्बन्धित हैं :–भाट समाज

पारम्परिक कला विधा में आपकी भूमिका :–कच्छी घोड़ी गीत गायक व वादक

ईमेल :– नहीं

वेबसाईट :– नहीं

दूरभाष न. :– 9829334965

शैक्षणिक योग्यता :–

संस्था का नाम :– नहीं

वर्तमान व स्थाई पता :– 71 पानी पेच कलाकार कॉलोनी, पुलिस अकेडमी के सामने, शास्त्री नगर, जयपुर

आपकी कलाविधा की वर्तमान स्थिति :– गरीबी के कारण हमारी शिक्षा नहीं हो पा रही है। हमारे बड़े–बुजुर्ग ही इस विधा के साथ सही ठंग से जी नहीं पा रहे है ऐसे में इस विधा को अपनाने में हमें डर लग रहा है।

भविष्य के लिये सुझाव :– हमारी दशा को सुधारने में केवल सरकार ही हमारी मदद कर सकती है। अगर हमारी लोक विधाओं को संरक्षण प्राप्त होगा तभी हम इस ओर बढ पायेंगे।

दिनांक : 19.05.16

स्थान : जयपुर

शोधकर्ता के हस्ताक्षर पारम्परिक कलाकार के हस्ताक्षर

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत परम्पराओं के संरक्षण हेतु स्वीकृत परियोजना

फाईल न.:–28-6/ICH-Scheme/ 91/2015-16, 29 January 2016 संलग्न सं.:– 1

राजस्थान की विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियां

कच्छी घोड़ी शैली के पारम्परिक कलाकारों पर आधारित एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन

सम्पर्कसूत्र व अन्य जानकारियों हेतु प्रस्तावित प्रपत्र, सत्र 2015–16

कलाकार का नाम :– गणेश भाट

जन्म तिथि :– याद नहीं उम्र :– 54 वर्ष

पत्नि का नाम :– श्रीमती संतोष देवी

माता व पिता का नाम :– स्व. बिदामी देवी व स्व. लालुराम भाट

समुदाय जिससे आप सम्बन्धित हैं :–भाट समाज

पारम्परिक कला विधा में आपकी भूमिका :– कच्छी घोड़ी व कठपुतली गायक व वादक

ईमेल :– नहीं

वेबसाईट :– नहीं

दूरभाष न. :– 9829334965

शैक्षणिक योग्यता :– 8 वीं तक

संस्था का नाम :– नहीं

वर्तमान व स्थाई पता :– 70 पानी पेच कलाकार कॉलोनी, पुलिस अकेडमी के सामने, शास्त्री नगर, जयपुर

आपकी कलाविधा की वर्तमान स्थिति :– स्थिति अच्छी नहीं है। काम की कमी है। जीवन–यापन कठिन हो रहा है।

भविष्य के लिये सुझाव :– हमारी पारम्परिक कला विधाओं को बचाये रखने के लिये आज यहां नये पारम्परिक लोक विधा रंगमंच बनें या नये संस्थान बनें जिनका संचालन भी हमारे हाथों में ही हो ताकि हमारी पारम्परिक विधाएं सुरक्षित भी रह सकें और हमे हमारा पूरा मेहनताना भी मिल सके।

दिनांक : 19.05.16

स्थान : जयपुर

शोधकर्ता के हस्ताक्षर पारम्परिक कलाकार के हस्ताक्षर

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत परम्पराओं के संरक्षण हेतु स्वीकृत परियोजना

फाईल न.:–28-6/ICH-Scheme/ 91/2015-16, 29 January 2016 संलग्न सं.:– 1

राजस्थान की विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियां

कच्छी घोड़ी शैली के पारम्परिक कलाकारों पर आधारित एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन

सम्पर्कसूत्र व अन्य जानकारियों हेतु प्रस्तावित प्रपत्र, सत्र 2015–16

कलाकार का नाम :– पिन्टु भाट

जन्म तिथि :– याद नहीं उम्र :– 25 वर्ष

पत्नि का नाम :– श्रीमती काली देवी

माता व पिता का नाम :– श्रीमती शान्ती देवी व श्री रामपाल भाट

समुदाय जिससे आप सम्बन्धित हैं :–भाट समाज

पारम्परिक कला विधा में आपकी भूमिका :–कच्छी घोड़ी में रणसिंघा व बांकिया वादक

ईमेल :– नहीं

वेबसाईट :– नहीं

दूरभाष न. :– 9929081960

शैक्षणिक योग्यता :– निरक्षर

संस्था का नाम :– नहीं

वर्तमान व स्थाई पता :– 71 पानी पेच कलाकार कॉलोनी, पुलिस अकेडमी के सामने, शास्त्री नगर, जयपुर

आपकी कलाविधा की वर्तमान स्थिति :– काम धन्धा नहीं है। हाथी घोड़े बना कर टाईम पास कर रहे हैं।

भविष्य के लिये सुझाव :– हमारे लिये कोई संस्था खुले तो हमें भी लगातार काम मिले।

दिनांक : 22.05.16

स्थान : जयपुर

शोधकर्ता के हस्ताक्षर पारम्परिक कलाकार के हस्ताक्षर

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत परम्पराओं के संरक्षण हेतु स्वीकृत परियोजना

फाईल न.:–28-6/ICH-Scheme/ 91/2015-16, 29 January 2016 संलग्न सं.:– 1

राजस्थान की विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियां

कच्छी घोड़ी शैली के पारम्परिक कलाकारों पर आधारित एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन

सम्पर्कसूत्र व अन्य जानकारियों हेतु प्रस्तावित प्रपत्र, सत्र 2015–16

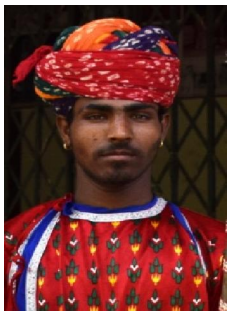

कलाकार का नाम :– विष्णु भाट

जन्म तिथि :– याद नहीं उम्र :– 18 वर्ष

पत्नि का नाम :– अविवाहित

माता व पिता का नाम :– श्रीमती शान्ती देवी व श्री रामपाल भाट

समुदाय जिससे आप सम्बन्धित हैं :–भाट समाज

पारम्परिक कला विधा में आपकी भूमिका :–कच्छी घोड़ी गीत गायक व ढोल वादक

ईमेल :– नहीं

वेबसाईट :– नहीं

दूरभाष न. :– 9928446370

शैक्षणिक योग्यता :– 6 वीं तक

संस्था का नाम :– नहीं

वर्तमान व स्थाई पता :– 71 पानी पेच कलाकार कॉलोनी, पुलिस अकेडमी के सामने, शास्त्री नगर, जयपुर

आपकी कलाविधा की वर्तमान स्थिति :– अच्छी नहीं है। महिनेभर में 4 से 5 हज़ार रूपये कमा पाते हैं इससे घर चलाना मुश्किल है।

भविष्य के लिये सुझाव :– कोई ऐसी संस्था बने जो हमारी पारम्परिक विधाओं के लिये काम करे तो हमारा भला हो सकता है।

दिनांक : 22.05.16

स्थान : जयपुर

शोधकर्ता के हस्ताक्षर पारम्परिक कलाकार के हस्ताक्षर

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत परम्पराओं के संरक्षण हेतु स्वीकृत परियोजना

फाईल न.:–28-6/ICH-Scheme/ 91/2015-16, 29 January 2016 संलग्न सं.:– 1

राजस्थान की विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियां

कच्छी घोड़ी शैली के पारम्परिक कलाकारों पर आधारित एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन

सम्पर्कसूत्र व अन्य जानकारियों हेतु प्रस्तावित प्रपत्र, सत्र 2015–16

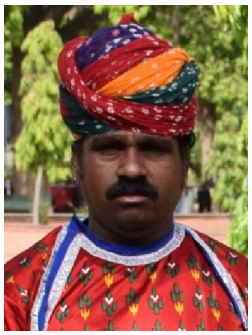

कलाकार का नाम :– कैलाश भाट

जन्म तिथि :– याद नहीं उम्र :– 35 वर्ष

पत्नि का नाम :– श्रीमती राधा देवी

माता व पिता का नाम :– श्रीमती सोमनाथ देवी व श्री कानाराम भाट

समुदाय जिससे आप सम्बन्धित हैं :–भाट समाज

पारम्परिक कला विधा में आपकी भूमिका :–कच्छी घोड़ी शिल्पकार, नृतक व बांकिया वादक

ईमेल :– नहीं

वेबसाईट :– नहीं

दूरभाष न. :– 9571169907

शैक्षणिक योग्यता :– निरक्षर

संस्था का नाम :– नहीं

वर्तमान व स्थाई पता :– 47 पानी पेच कलाकार कॉलोनी, पुलिस अकेडमी के सामने, शास्त्री नगर, जयपुर

आपकी कलाविधा की वर्तमान स्थिति :– अभी हमारे पास काम नहीं है। बेरोजगारी की स्थिति है।

भविष्य के लिये सुझाव :– काम मिलेगा तो जरूर काम करेंगे।

दिनांक : 19.05.16

स्थान : जयपुर

शोधकर्ता के हस्ताक्षर पारम्परिक कलाकार के हस्ताक्षर

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत परम्पराओं के संरक्षण हेतु स्वीकृत परियोजना

फाईल न.:–28-6/ICH-Scheme/ 91/2015-16, 29 January 2016 संलग्न सं.:– 1

राजस्थान की विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियां

कच्छी घोड़ी शैली के पारम्परिक कलाकारों पर आधारित एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन

सम्पर्कसूत्र व अन्य जानकारियों हेतु प्रस्तावित प्रपत्र, सत्र 2015–16

कलाकार का नाम :– विजय नागौरी

जन्म तिथि :– 13.01.1972 उम्र :– 44 वर्ष

पत्नि का नाम :– स्व. विमला देवी

माता व पिता का नाम :– श्रीमती बसन्ती देवी व श्री बाबूलाल भाट

समुदाय जिससे आप सम्बन्धित हैं :– भाट समाज

पारम्परिक कला विधा में आपकी भूमिका :–कच्छी घोड़ी व कठपुतली गायक व वादक

ईमेल :– **vijaybhatt.nagori@gmail.com**

वेबसाईट :– नहीं

दूरभाष न. :– 9829334965

शैक्षणिक योग्यता :– 10 वीं तक

संस्था का नाम :– नहीं

वर्तमान व स्थाई पता :– के–494 कठपुतली कॉलोनी, शादीपुर डिपो, नई दिल्ली–110008

स्थाई पता :– 228 कठपुतली नगर, भवानी सिंह रोड़, ज्योति, नगर मोड़, जयपुर

आपकी कलाविधा की वर्तमान स्थिति :– डामाडोल स्थिति है। इन दिनों काम बिल्कुल नहीं है। आजीविका चलाना मुश्किल हो रहा है। इवेन्ट कम्पनियों के कारण हमारी पारम्परिक लोक विधाएं आहत हो रही हैं।

भविष्य के लिये सुझाव :– हमारी लोक विधाओं को बचाने के प्रयास किये जायें तो अच्छा रहेगा।

दिनांक : 04.06.16

स्थान : जयपुर

शोधकर्ता के हस्ताक्षर पारम्परिक कलाकार के हस्ताक्षर

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत परम्पराओं के संरक्षण हेतु स्वीकृत परियोजना

फाईल न.:–28-6/ICH-Scheme/ 91/2015-16, 29 January 2016 संलग्न सं.:– 1

राजस्थान की विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियां

कच्छी घोड़ी शैली के पारम्परिक कलाकारों पर आधारित एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन

सम्पर्कसूत्र व अन्य जानकारियों हेतु प्रस्तावित प्रपत्र, सत्र 2015–16

कलाकार का नाम :– बंसी राणा

जन्म तिथि :– याद नहीं उम्र :–60 वर्ष

पत्नि का नाम :– श्रीमती प्यारी देवी

माता व पिता का नाम :– स्व. सुन्दर देवी व स्व. मोठू राम राणा

समुदाय जिससे आप सम्बन्धित हैं :–राणा ढोली समाज

ईमेल :– नहीं

पारम्परिक कला विधा में आपकी भूमिका :–कच्छी घोड़ी नृतक व गायक

वेबसाईट :– नहीं

दूरभाष न. :–9784163091

शैक्षणिक योग्यता :– अशिक्षित

संस्था का नाम :– नहीं

वर्तमान व स्थाई पता :– राणा बस्ती, हसनपुरा–ए, जयपुर–302006

आपकी कलाविधा की वर्तमान स्थिति :– स्थिति अच्छी नहीं है। जनवरी से मार्च माह तक लगातार काम मिलता है। उसके बाद हम लोग बेरोज़गार की तरह हैं। अगर ऐसा ही रहा तो कच्छी घोड़ी परम्परा खत्म हो जायेगी।

भविष्य के लिये सुझाव :– अगर हमें लगातार काम मिलता रहे तो अच्छा है। हमारी इस पारम्परिक विधा को बचाने में सरकार हमारा सहयोग करे।

दिनांक : 01.06.16

स्थान : जयपुर

शोधकर्ता के हस्ताक्षर पारम्परिक कलाकार के हस्ताक्षर

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत परम्पराओं के संरक्षण हेतु स्वीकृत परियोजना

फाईल न.:–28-6/ICH-Scheme/ 91/2015-16, 29 January 2016 संलग्न सं.:– 1

राजस्थान की विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियां

कच्छी घोड़ी शैली के पारम्परिक कलाकारों पर आधारित एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन

सम्पर्कसूत्र व अन्य जानकारियों हेतु प्रस्तावित प्रपत्र, सत्र 2015–16

कलाकार का नाम :– जगदीश प्रसाद राणा

जन्म तिथि :– याद नहीं उम्र :–50 वर्ष

पत्नि का नाम :– श्रीमती रामप्यारी देवी

माता व पिता का नाम :– स्व. केसर देवी व स्व. रामदेव राणा

समुदाय जिससे आप सम्बन्धित हैं :–राणा ढोली समाज

पारम्परिक कला विधा में आपकी भूमिका :–कच्छी घोड़ी में शहनाई वादक

ईमेल :– नहीं

वेबसाईट :– नहीं

दूरभाष न. :– 9799341838

शैक्षणिक योग्यता :– अशिक्षित

संस्था का नाम :– नहीं

वर्तमान व स्थाई पता :– राणा बस्ती, जोगेश्वर महादेव मंदिर के पास, हसनपुरा–ए, जयपुर–302006

आपकी कलाविधा की वर्तमान स्थिति :– पहले के समय में शहनाई राजस्थान का पहले नम्बर का वाद्य था लेकिन आजकल के आधुनिक साजों के कारण शहनाई खो सी गयी है। इसे बचाया जाये नहीं तो कल काई इसका नाम लेने वाला भी नहीं बचेगा।

भविष्य के लिये सुझाव :– शहनाई वादन तो हमारा खानदानी व्यवसाय है। अगर इसी क्षेत्र में अवसर मिलें तो हमारे लिये बहुत अच्छा है नहीं तो दूसरे व्यावसायों की ओर जाने को हम विवश हैं। इस प्रकार की संस्था खुले जो हमारी लोक विधाओं को सम्भाल सके।

दिनांक : 01.06.16

स्थान : जयपुर

शोधकर्ता के हस्ताक्षर पारम्परिक कलाकार के हस्ताक्षर

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत परम्पराओं के संरक्षण हेतु स्वीकृत परियोजना

फाईल न.:–28-6/ICH-Scheme/ 91/2015-16, 29 January 2016 संलग्न सं.:– 1

राजस्थान की विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियां

कच्छी घोड़ी शैली के पारम्परिक कलाकारों पर आधारित एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन

सम्पर्कसूत्र व अन्य जानकारियों हेतु प्रस्तावित प्रपत्र, सत्र 2015–16

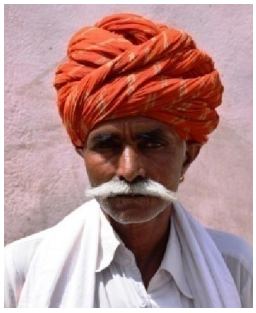

कलाकार का नाम :– बाबूलाल राणा

जन्म तिथि :– मालूम नहीं उम्र :–55 वर्ष

पत्नि का नाम :– श्रीमती दुर्गा देवी

माता व पिता का नाम :– स्व. गुलाबी देवी व स्व. चम्पा लाल राणा

समुदाय जिससे आप सम्बन्धित हैं :–राणा ढोली समाज

पारम्परिक कला विधा में आपकी भूमिका :–कच्छी घोड़ी बांकिया वादक व गायक

ईमेल :– नहीं

वेबसाईट :– नहीं

दूरभाष न. :–9928955253 व 9928184352

शैक्षणिक योग्यता :– अशिक्षित

संस्था का नाम :– नहीं

वर्तमान व स्थाई पता :– हरि जेठी के कुए के पास, राणा बस्ती हसनपुरा–ए,
जयपुर–302006

आपकी कलाविधा की वर्तमान स्थिति :– हमारी लोक कला विधा अभी बुरे दौर से गुज़र रही है। हमारे पास काम नहीं है। कोई भी हमारी ओर ध्यान नहीं दे रहा है।

भविष्य के लिये सुझाव :– अगर हमें लगातार काम मिले तो हमारी दशा सुधर सकती है। हमें सरकार संरक्षण प्रदान करे तभी यह विधा बचेगी।

दिनांक : 01.06.16

स्थान : जयपुर

शोधकर्ता के हस्ताक्षर पारम्परिक कलाकार के हस्ताक्षर

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत परम्पराओं के संरक्षण हेतु स्वीकृत परियोजना

फाईल न.:–28-6/ICH-Scheme/ 91/2015-16, 29 January 2016 संलग्न सं.:– 1

राजस्थान की विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियां

कच्छी घोड़ी शैली के पारम्परिक कलाकारों पर आधारित एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन

सम्पर्कसूत्र व अन्य जानकारियों हेतु प्रस्तावित प्रपत्र, सत्र 2015–16

कलाकार का नाम :– सुशील कुमार राणा

जन्म तिथि :– याद नहीं उम्र :–32 वर्ष

पत्नि का नाम :– श्रीमती गीता देवी

माता व पिता का नाम :– श्रीमती लल्ली देवी व कैलाश चन्द राणा

समुदाय जिससे आप सम्बन्धित हैं :–राणा ढोली समाज

पारम्परिक कला विधा में आपकी भूमिका :–कच्छी घोड़ी नृत्य में बांकिया व रणसिंघा वादक

ईमेल :– नहीं

वेबसाईट :– नहीं

दूरभाष न. :– 9636406026

शैक्षणिक योग्यता :– अशिक्षित

संस्था का नाम :– नहीं

वर्तमान व स्थाई पता :– बदरू खाती की टाल, नवल बस्ती, हसनपुरा–ए, जयपुर–302006

आपकी कलाविधा की वर्तमान स्थिति :– बहुत गम्भीर स्थिति है। खर्चा चलाना मुश्किल है। गरीबी इतनी है कि बच्चों की पढ़ाई–लिखाई भी नहीं हो पा रही है।

भविष्य के लिये सुझाव :– हमें सरकार सहयोग करे व लगातार काम दे ताकि हमारी दशा सुधर सके।

दिनांक : 01.06.16

स्थान : जयपुर

शोधकर्ता के हस्ताक्षर पारम्परिक कलाकार के हस्ताक्षर

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत परम्पराओं के संरक्षण हेतु स्वीकृत परियोजना

फाईल न.:–28-6/ICH-Scheme/ 91/2015-16, 29 January 2016 संलग्न सं.:– 1

राजस्थान की विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियां

कच्छी घोड़ी शैली के पारम्परिक कलाकारों पर आधारित एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन

सम्पर्कसूत्र व अन्य जानकारियों हेतु प्रस्तावित प्रपत्र, सत्र 2015–16

कलाकार का नाम :– कैलाश चन्द राणा

जन्म तिथि :– 05.05.1957 उम्र :–60 वर्ष

पत्नि का नाम :– श्रीमती लल्ली देवी

माता व पिता का नाम :– श्रीमती सुन्दरी देवी व श्री राम प्रसाद राणा

समुदाय जिससे आप सम्बन्धित हैं :–राणा ढोली समाज

पारम्परिक कला विधा में आपकी भूमिका :–कच्छी घोड़ी नृतक व शहनाई वादक

ईमेल :– नहीं

वेबसाईट :– नहीं

दूरभाष न. :–9680175778

शैक्षणिक योग्यता :– अशिक्षित

संस्था का नाम :– नहीं

वर्तमान व स्थाई पता :– बदरू खाती की टाल, नवल बस्ती, हसनपुरा–ए, जयपुर–302006

आपकी कलाविधा की वर्तमान स्थिति :– स्थिति खराब है। ब्याह–शादियों, उत्सवों में थोड़ा बहुत काम मिलता है जिससे गुज़ारा भी नहीं हो पाता।

भविष्य के लिये सुझाव :– सरकार हमारी ओर ध्यान दे तो हमारी लोक कलाएं बच सकती हैं। हमारी लोक परम्पराओं को बचाने के लिये हमारे पास सुविधाएं नहीं है।

दिनांक : 01.06.16

स्थान : जयपुर

शोधकर्ता के हस्ताक्षर पारम्परिक कलाकार के हस्ताक्षर

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत परम्पराओं के संरक्षण हेतु स्वीकृत परियोजना

फाईल न.:–28-6/ICH-Scheme/ 91/2015-16, 29 January 2016 संलग्न सं.:– 1

राजस्थान की विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियां

कच्छी घोड़ी शैली के पारम्परिक कलाकारों पर आधारित एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन

सम्पर्कसूत्र व अन्य जानकारियों हेतु प्रस्तावित प्रपत्र, सत्र 2015–16

कलाकार का नाम :– योगी राज राणा

जन्म तिथि :– याद नहीं उम्र :–28 वर्ष

पत्नि का नाम :– स्व. शान्ती देवी देवी

माता व पिता का नाम :– श्रीमती पानी देवी व सूरज नारायण राणा

समुदाय जिससे आप सम्बन्धित हैं :–राणा ढोली समाज

पारम्परिक कला विधा में आपकी भूमिका :–कच्छी घोड़ी नृतक व बांकिया, ढोल वादक

ईमेल :– नहीं

वेबसाईट :– नहीं

दूरभाष न. :–9928279810

शैक्षणिक योग्यता :– अशिक्षित

संस्था का नाम :– रंगीलो राजस्थान कला संस्था, जयपुर

वर्तमान व स्थाई पता :– राणा कॉलोनी, हसनपुरा–ए, जयपुर–302006

आपकी कलाविधा की वर्तमान स्थिति :– बेरोज़गारी है। इवेंट कम्पनियां हमारा शोषण कर रही हैं। पारदर्शी तरीके से काम नहीं मिल रहा है। जो प्रसिद्ध कलाकार हैं उन्हे ही काम मिलता है हमें कोई नहीं पूछता।

भविष्य के लिये सुझाव :– जयपुर एक हैरिटेज सिटी है। यहां के तमाम पर्यटक स्थलों पर यदि हम कलाकारों को नियमित रूप से नौकरी पर रख लिया जाये तो हमारी दशा सुधर सकती है।

दिनांक : 01.06.16

स्थान : जयपुर

शोधकर्ता के हस्ताक्षर पारम्परिक कलाकार के हस्ताक्षर

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत परम्पराओं के संरक्षण हेतु स्वीकृत परियोजना

फाईल न.:–28-6/ICH-Scheme/ 91/2015-16, 29 January 2016 संलग्न सं.:– 1

राजस्थान की विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियां

कच्छी घोड़ी शैली के पारम्परिक कलाकारों पर आधारित एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन

सम्पर्कसूत्र व अन्य जानकारियों हेतु प्रस्तावित प्रपत्र, सत्र 2015–16

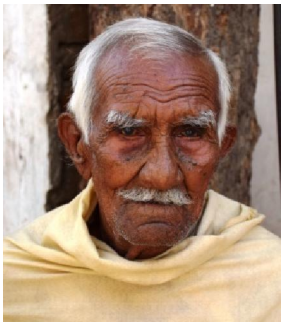

कलाकार का नाम :– राम प्रसाद राणा

जन्म तिथि :– याद नहीं उम्र :– 90 वर्ष

पत्नि का नाम :– स्व. सुन्दर देवी

माता व पिता का नाम :– स्व. सरेली देवी व स्व. छोगा राम राणा

समुदाय जिससे आप सम्बन्धित हैं :–राणा ढोली समाज

पारम्परिक कला विधा में आपकी भूमिका :–कच्छी घोड़ी कलाकार

ईमेल :– नहीं

वेबसाईट :– नहीं

दूरभाष न. :–9636406026

शैक्षणिक योग्यता :– अशिक्षित

संस्था का नाम :– नहीं

वर्तमान व स्थाई पता :– हरि जेठी के कुए के पास, हसनपुरा–ए, जयपुर–302006

आपकी कलाविधा की वर्तमान स्थिति :– स्थिति अच्छी नहीं है। बच्चे परेशान हैं। यही हाल रहा तो कच्छी घोड़ी लुप्त हो जायेगी।

भविष्य के लिये सुझाव :– इसे बचाइये। कोई संस्था खोलिये ताकि हमारी लोक विधाएं संरक्षित हो सकें।

दिनांक : 01.06.16

स्थान : जयपुर

शोधकर्ता के हस्ताक्षर पारम्परिक कलाकार के हस्ताक्षर

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत परम्पराओं के संरक्षण हेतु स्वीकृत परियोजना

फाईल न.:–28-6/ICH-Scheme/ 91/2015-16, 29 January 2016 संलग्न सं.:– 1

राजस्थान की विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियां

कच्छी घोड़ी शैली के पारम्परिक कलाकारों पर आधारित एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन

सम्पर्कसूत्र व अन्य जानकारियों हेतु प्रस्तावित प्रपत्र, सत्र 2015–16

कलाकार का नाम :– प्रभुदयाल भाट

जन्म तिथि :– याद नहीं उम्र :– 41 वर्ष

पत्नि का नाम :– श्रीमती शारदा देवी

माता व पिता का नाम :– श्रीमती विद्या देवी व श्री शायर राम भाट

समुदाय जिससे आप सम्बन्धित हैं :– भाट समाज

पारम्परिक कला विधा में आपकी भूमिका :–कच्छी घोड़ी नृतक व ढोल वादक

ईमेल :– नहीं

वेबसाईट :– नहीं

दूरभाष न. :– 9636100704

शैक्षणिक योग्यता :– अशिक्षित

संस्था का नाम :– नहीं

वर्तमान व स्थाई पता :– म.न. 46 कठपुतली नगर, ज्योति नगर मोड़, जयपुर

आपकी कलाविधा की वर्तमान स्थिति :– अब हम हमारे बच्चों को भी यह विधा नहीं सिखाना चाहते क्योंकि इस विधा में भरण–पोषण नहीं है और आज के युग की रफ्तार बहुत तेज है।

भविष्य के लिये सुझाव :– हमारी स्थिति सरकार को पता है। कई बार लिखित में सुझाव दिये हैं लेकिन आज तक कोई बदलाव नहीं हुआ है।

दिनांक : 25.05.16

स्थान : जयपुर

शोधकर्ता के हस्ताक्षर पारम्परिक कलाकार के हस्ताक्षर

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत परम्पराओं के संरक्षण हेतु स्वीकृत परियोजना

फाईल न.:–28-6/ICH-Scheme/ 91/2015-16, 29 January 2016 संलग्न सं.:– 1

राजस्थान की विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियां

कच्छी घोड़ी शैली के पारम्परिक कलाकारों पर आधारित एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन

सम्पर्कसूत्र व अन्य जानकारियों हेतु प्रस्तावित प्रपत्र, सत्र 2015–16

कलाकार का नाम :– शारदा देवी

जन्म तिथि :– याद नहीं उम्र :– 28 वर्ष

पती का नाम :– श्री प्रभुदयाल भाट

माता व पिता का नाम :– श्रीमती कमला देवी व श्री समर लाल

समुदाय जिससे आप सम्बन्धित हैं :– भाट समाज

पारम्परिक कला विधा में आपकी भूमिका :–कच्छी घोड़ी व कठपुतली कलाकार

ईमेल :– नहीं

वेबसाईट :– नहीं

दूरभाष न. :– 7742003934

शैक्षणिक योग्यता :– अशिक्षित

संस्था का नाम :– नहीं

वर्तमान व स्थाई पता :– म.न. 46 कठपुतली नगर, ज्योति नगर मोड़, जयपुर

आपकी कलाविधा की वर्तमान स्थिति :– स्थिति अच्छी नहीं है हालात बहुत खराब हैं। इस धन्धे में दिल्ली में बरकत है क्योंकि वहां कला और कलाकारों को इज्जत दी जाती है जबकि हमारे यहां ऐसा नहीं है।

भविष्य के लिये सुझाव :– कलाकारों को सम्मान व प्रोत्साहन मिले।

दिनांक : 25.05.16

स्थान : जयपुर

शोधकर्ता के हस्ताक्षर पारम्परिक कलाकार के हस्ताक्षर

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत परम्पराओं के संरक्षण हेतु स्वीकृत परियोजना

फाईल न.:–28-6/ICH-Scheme/ 91/2015-16, 29 January 2016 संलग्न सं.:– 1

राजस्थान की विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियां

कच्छी घोड़ी शैली के पारम्परिक कलाकारों पर आधारित एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन

सम्पर्कसूत्र व अन्य जानकारियों हेतु प्रस्तावित प्रपत्र, सत्र 2015–16

कलाकार का नाम :– आकाश भाट

जन्म तिथि :– याद नहीं उम्र :– 19 वर्ष

पत्नि का नाम :– अविवाहित

माता व पिता का नाम :– श्रीमती प्रभाती देवी व श्री शिशुपाल भाट

समुदाय जिससे आप सम्बन्धित हैं :–भाट समाज

पारम्परिक कला विधा में आपकी भूमिका :–कच्छी घोड़ी नृतक व ढोल वादक

ईमेल :– नहीं

वेबसाईट :– नहीं

दूरभाष न. :– 8696339833

शैक्षणिक योग्यता :– अशिक्षित

संस्था का नाम :– नहीं

वर्तमान व स्थाई पता :– 193 कठपुतली नगर, भवानी सिंह रोड़, जयपुर

आपकी कलाविधा की वर्तमान स्थिति :– दयनीय है, हम से अच्छे तो मजदूर हैं जिन्हे लगातार काम मिलता रहता है।

भविष्य के लिये सुझाव :– सरकार हम कलाकारों का रजिस्ट्रेशन करे ताकि हमारी दशा सुधरे।

दिनांक : 31.05.16

स्थान : जयपुर

शोधकर्ता के हस्ताक्षर पारम्परिक कलाकार के हस्ताक्षर

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत परम्पराओं के संरक्षण हेतु स्वीकृत परियोजना

फाईल न.:–28-6/ICH-Scheme/ 91/2015-16, 29 January 2016 संलग्न सं.:– 1

राजस्थान की विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियां

कच्छी घोड़ी शैली के पारम्परिक कलाकारों पर आधारित एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन

सम्पर्कसूत्र व अन्य जानकारियों हेतु प्रस्तावित प्रपत्र, सत्र 2015–16

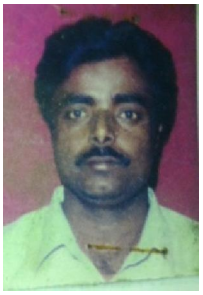

कलाकार का नाम :– बचन प्रकाश कोलिड़ा

जन्म तिथि :– 20.12.1978 उम्र :– 37 वर्ष

पत्नि का नाम :– श्रीमती सूशीला देवी

माता व पिता का नाम :– श्रीमती सुखी देवी व श्री मिश्री लाल

समुदाय जिससे आप सम्बन्धित हैं :–भाट समाज

पारम्परिक कला विधा में आपकी भूमिका :–कच्छी घोड़ी नृतक व शहनाई वादक

ईमेल :– नहीं

वेबसाईट :– नहीं

दूरभाष न. :– 9950146368

शैक्षणिक योग्यता :– 10 वीं तक

संस्था का नाम :– लक्की लोक कला विकास संस्थान, जयपुर (रजिस्टर्ड)

वर्तमान व स्थाई पता :– 228 कठपुतली नगर, भवानी सिंह रोड़, जयपुर

आपकी कलाविधा की वर्तमान स्थिति :– अच्छी नहीं है। जब शादी–ब्याह, सरकारी या गैर सरकारी आयोजन होते हैं तभी हमारी ज़रूरत महसूस होती है, बाकी समय में हम बेरोज़गार रहते हैं।

भविष्य के लिये सुझाव :– हमारी पारम्परिक लोक कलाओं को बचाने के लिये यदि कोई अकादेमी बन जाये तो हमारा भी भला हो जाये।

दिनांक : 31.05.16

स्थान : जयपुर

शोधकर्ता के हस्ताक्षर पारम्परिक कलाकार के हस्ताक्षर

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत परम्पराओं के संरक्षण हेतु स्वीकृत परियोजना

फाईल न.:–28-6/ICH-Scheme/ 91/2015-16, 29 January 2016 संलग्न सं.:– 1

राजस्थान की विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियां

कच्छी घोड़ी शैली के पारम्परिक कलाकारों पर आधारित एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन

सम्पर्कसूत्र व अन्य जानकारियों हेतु प्रस्तावित प्रपत्र, सत्र 2015–16

कलाकार का नाम :– सुशला देवी भाट

जन्म तिथि :– याद नहीं उम्र :– 35 वर्ष

पती का नाम :– शानु भाट

माता व पिता का नाम :– श्रीमती प्रभाती देवी व श्री लीला भाट

समुदाय जिससे आप सम्बन्धित हैं :– भाट समाज

पारम्परिक कला विधा में आपकी भूमिका :–कच्छी घोड़ी व कठपुतली कलाकार

ईमेल :– नहीं

वेबसाईट :– नहीं

दूरभाष न. :– 9950402918

शैक्षणिक योग्यता :– निरक्षर

संस्था का नाम :– नहीं

वर्तमान व स्थाई पता :– 192 कठपुतली नगर, भवानी सिंह रोड़, जयपुर

आपकी कलाविधा की वर्तमान स्थिति :– बच्चे पालने भी मुश्किल हो रहे हैं। कलाकारों को अहमियत नहीं मिल रही है। शिक्षा हमारे बूते से बाहर है।

भविष्य के लिये सुझाव :– सरकारी योजनाओं का यदि हमें भी लाभ मिले तो हमारा जीवन भी उज्जवल हो सकता है।

दिनांक : 31.05.16

स्थान : जयपुर

शोधकर्ता के हस्ताक्षर पारम्परिक कलाकार के हस्ताक्षर

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत परम्पराओं के संरक्षण हेतु स्वीकृत परियोजना

फाईल न.:–28-6/ICH-Scheme/ 91/2015-16, 29 January 2016 संलग्न सं.:– 1

राजस्थान की विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियां

कच्छी घोड़ी शैली के पारम्परिक कलाकारों पर आधारित एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन

सम्पर्कसूत्र व अन्य जानकारियों हेतु प्रस्तावित प्रपत्र, सत्र 2015–16

कलाकार का नाम :– बनवारी भाट

जन्म तिथि :– याद नहीं उम्र :– 33 वर्ष

पत्नि का नाम :– श्रीमती मंजू देवी

माता व पिता का नाम :– श्रीमती प्रभाती देवी व श्री लीला राम

समुदाय जिससे आप सम्बन्धित हैं :–भाट समाज

पारम्परिक कला विधा में आपकी भूमिका :–कच्छी घोड़ी व कठपुतली कलाकार

ईमेल :– नहीं

वेबसाईट :– नहीं

दूरभाष न. :– 9880458709

शैक्षणिक योग्यता :– निरक्षर

संस्था का नाम :– नहीं

वर्तमान व स्थाई पता :– 192 कठपुतली नगर, भवानी सिंह रोड़, जयपुर

आपकी कलाविधा की वर्तमान स्थिति :– कच्छी घोड़ी का काम लगातार नहीं मिल पाता इसलिये साथ में कठपुतली का खेल दिखा कर जीवन यापन कर रहे हैं। हमारी पारम्परिक लोक विधाओं की स्थिति बहुत दयनीय है।

भविष्य के लिये सुझाव :– अगर सरकार की तरफ से हमें सहयोग मिले तो हमारा स्तर भी सुधर सकता है।

दिनांक : 31.05.16

स्थान : जयपुर

शोधकर्ता के हस्ताक्षर पारम्परिक कलाकार के हस्ताक्षर